पद्मावत।

मलिक मुहम्मद जायसी विरचित।

कलकत्ता

३४।१ कोलुटोलास्ट्रीट, बङ्गवासी ष्टीम-मेशिन-प्रेसमें

श्रीकेवलराम चट्टोपाध्याय द्वारा

मुद्रित और प्रकाशित।

सम्वत् १९५२।

दाम ॥) आठ आना।

पद्मावत ।

मलिक मुहम्मद जायसी विरचित ।

कलकत्ता

३४।१ कोलुटोलास्ट्रीट, बङ्गवासी स्टीम-मेशिन प्रेसमें

श्रीकेवलराम चट्टोपाध्याय द्वारा

मुद्रित और प्रकाशित ।

सम्वत् १९५२ ।

दाम ।।) आठ आना ।

पद्मावत।

स्तुतिखण्ड।

सुमिरउं आदि एक करतारू। जें जिव दीन्ह कीन्ह संसारू॥
कीन्हेसि प्रथम ज्योति परकासू। कीन्हेसि तिनहिं प्रीति कैलासू॥
कीन्हेसि अग्नि पवन जल खेहा। कीन्हेसि बहुतै रंग ओरेहा॥
कीन्हेसि धरती सरगु पतारू। कीन्हेसि बरन बरन अवतारू॥
कीन्हेसि दिन दिनेस ससि राती। कीन्हेसि नखत तरायनपांती॥
कीन्हेसि धूप सेव औ छांहा। कीन्हेसि मेघ बीजु तेहि मांहा॥
कीन्हेसि सप्त मही ब्रह्मण्डा। कीन्हेसि भुवन चौदहो खण्डा॥

कीन्ह सबै अस जाकर दूसर छाजन काहि।
पहिलै ताकर नाउं लै कथा करौं अवगाहि॥

कीन्हेसि सात समुन्दर पारा। कीन्हेसि मेरु खखण्ड पहारा॥
कीन्हेसि नदी नार औ झरना। कीन्हेसि मगर मच्छ बहुवरना॥
कीन्हेसि सीप मोति तहं भरे। कीन्हेसि बहुतै नग निरमरे॥
कीन्हेसि बनखंड औ जड़मूरी। कीन्हेसि तरवर तार खजूरी॥
कीन्हेसि सावज आरन रहैं। कीन्हेसि पंख उड़ैं जहं चहैं॥

कीन्हेसि बरन सेत औ स्यामा। कीन्हेसि भूख नींद बिसरामा॥
कीन्हेसि पान फूल बहु भोगू। कीन्हेसि बहु औखध बहु रोगू॥

निमिख न लाग करत वह सबै कीन्ह पल एक।
गगन अन्तरिछ राखा, बाज खंभ बिन टेक॥

कीन्हेसि अगर कुरंगमद बिना। कीन्हेसि भीमसेन औ चीना॥
कीन्हेसि नाग जो मुख बिखबसा। कीन्हेसि मन्त्रहरे जेहिं डसा॥
कीन्हेसि अमित जिये जो पाई। कीन्हेसि बिखहि मीच जेहि खाई
कीन्हेसि ऊख मीठ रसभरी। कीन्हेसि करू बेल बहु फरी॥
कीन्हेसि मधु लावे ले माखी। कीन्हेसि भंवरपंख औ पाखी॥
कीन्हेसि लोवा अन्दर चांटी। कीन्हेसि बहुत रहहिं खनमाटी॥
कीन्हेसि राकस भूत परेता। कीन्हेसि भूकस देव दयीता॥

कीन्हेसि सहस अठारह बरनबरन उपराज।
भुगत दिहिस पुनि सबनकहं सकल साजनासाज॥

कीन्हेसि मानुख दिहिसि बड़ाई। कीन्हेसि अन्नभुगत तहं पाई॥
कीन्हेसि राजा भोजहि राजू। कीन्हेसि हस्ति घोरतहं साजू॥
कीन्हेसि तेहि कहं बहुत बिरासू। कीन्हेसि कोइ ठाकुरकोइदासू
कीन्हेसि द्रव्य गर्व जेहि होई। कीन्हेसि लोभ अघाइ न कोई॥
कीन्हेसि जियन सदा सब चहा। कीन्हेसि मीच न कोई रहा॥
कीन्हेसि सुख औ कोटि अनंदू। कीन्हेसि दुख चिन्ता औ दंदू॥
कीन्हेसि कोइ भिखारि कोइ धनी। कीन्हेसि संपति बिपतिपुनिघनी

कीन्हेसि कोइ निभरोसी कीन्हेसि कोइ बरियार।
छारहिते सब कीन्हेसि पुनि कीन्हेसि सब छार॥

धनपति वही जेहेक संसारू। सबै देइ नित घटन भंड़ारू॥
जनवंत जगत हस्थि औ चांटा। सबकहं भुगत रातिदिन बांटा॥
ताकर दीठि जो सब उपराहीं। मित्र शत्रु कोइ बिसरे नाहीं॥
पंख पतङ्ग न बिसरे कोई। परगट गुपतु जहां लग होई॥
भोग भुगत बहु भांति उपाई। सबै खवाइ आप नहिं खाई॥
ताकर वही जो खाना पीना। सब कहं देइ भुगत औ चीना॥
सबै आस ताकर हरि खांसा। बड़ि न काहुकी आस निरासा॥

जुग जुग देत घटा नहिं उभय हाथ अस कीन्ह।
औ जो दीन्ह जगत महं सो सब ताकर दीन्ह॥

आदि एक वरनउं सो राजा। आदि न अन्तराज जेहि छाजा॥
सदा सरबदा राज सो करे। औ जेहि चहे राज तेहि दरे॥
छत्रहि अछत निछत्रहि छावा। दूसर नाहिं जो सरवर पावा॥
परवत ढहि देखत सब लोगू। चांटहि करहि हस्थि सरयोगू॥
वज्रहि तिनकहि मार उड़ाई। तिनै वज्र करि देइ बड़ाई॥
ताकर कीन्ह न जानै कोई। कर सो जो मन चिन्तन होई॥
काहू भोग भुगति सुख सारा। काहू भूंख बहुत दुख मारा॥

सबै नास्त वह दृस्थिर अइस साज जेहिकेर।
एक साजी औ भाजौ चहै सवारे फेर॥

अलखरूप अवरन सो कर्त्ता। वह सबसौं सब वहसौं वर्त्ता॥
प्रकट गुपितु सो सर्व्वव्यापी। धर्म्मी चीन्ह न चीन्हे पापी॥
न वह पूत नहिं पिता न माता। ना वह कुटुंब न कोइ संग नाता॥
जना न काहि न कोइ वै जना। जहं लग सब ताकी सिरजना॥

वै सब कीन्ह जहां लग कोई। वह नहिं कीन्ह काहुकर होई॥
हति पहिले औ अवहै सोई। पुनि सो रहै रहै नहिं कोई॥
और जो होय सो वावर अन्धा। दिन दुइ चारि मरै कर धन्धा॥

जो वह चहा सो कीन्हेसि करै जो चाहै कीन्ह।
वरजनहार न कोई सवै चाहि जेउ दीन्ह॥

बिन बुधि वहि जोकर होइआनू। जसपुराणमहिं लिखा वखानू॥
जीव नाहिं पै जियै गुसांई। कर नाहीं पै करै सवांई॥
जीभ नाहिं पै सव कुछबोला। तन नाहीं सव ठाहरडोला॥
श्रवणनाहिं पै सवकुछ सुना। हिया नाहिं पै सबकुछ गुना॥
नयन नाहिं पैसव कुछ देखा। कौन भांति अस जाय विशेखा॥
ना कोई है वह को रूपा। ना वहसों कोइ आहि अनूपा॥
ना वह ठाउं न वह बिनठाउं। रूपरेखबिन निरमल नाउं॥

ना वह मिला न वेहरा अइस रहा भरिपूर।
दीठिवन्त कहं नेरे अन्धहि मूरुख दूर॥

और जो दीन्हेसि रतन अमोला। ताकर मर्म न जानै भोला॥
दीन्हेसि रसना औ रस भोगू। दीन्हेसि दसन जो विहंसे जोगू॥
दीन्हेसि जगदेखन कहं नयना। दीन्हेसि श्रवण सुनेकहं वयना॥
दीन्हेसि कण्ठ बोल जेहि माहां। दीन्हेसि करपल्लव वरवाहां॥
दीन्हेसि चरण अनूप चलाहीं। सो जानै जेहि दीन्हेसि नाहीं॥
जीवन मरम जानि पै वूझा। मिला न तरुना या जग ढूंढा॥
सुखकर मरम न जानै राजा। दुखी जानि जामहं दुखवाजा॥

काय कामरस जानिये रोगी भोगी रहै निचन्त।
सबकर मरम गुसांई जानै जो घटघट रह तन्त॥

अति अपार करताकर करना। बरनन कोई पावै बरना॥
सात स्वर्ग जो कागद करे। धरा समन्दर महं मसि भरे॥
जनवंत जगसाखावन ढांखा। जनवंत केस रदन पंखपांखा॥
जनवंत खेह रेह दुनियाई। मेघ बूंद औ गगन तराई॥
सब लिखनीकौ लिखि संसारा। लिखि न जायगतिसमुदअपारा॥
एतो कीन्ह सबगुण परगटा। अबहूं समुद महं बूंद न घटा॥
ऐसो जानि मनगर्व न होय। गर्व करे मन बावर सोय॥

बड़गुणवन्त गुसांई चहै संवारी वेग।
औ असगुणीसवांरी जो गुणचहो अनेग॥

कीन्हेसि पुरुख एक निरमरा। नाम मुहम्मद पूनों करा॥
प्रथम ज्योति विधि ताकी साजी। औ तेहि प्रीति सृष्टि उपराजी॥
दीपक-लेस जगत कहिं दीन्हा। भा निरमल जगमारग चीन्हा॥
जो न होत असपुरुख उज्यारा। सूझि न परत पंथअंधियारा॥
दूसर ठाउं जो दीवी लीखी। वहि धर्मों जो पाढ़त सीखी॥
जो नहिं लीन्ह जनम सो नाउं। ताकहं दीन्ह नरक महं ठाउं॥
जगत वसीठी दई वै कीन्ही। दुइ जग तरा नाउं तेहि लीन्ही॥

गुन अवगुन बिधि पूछत होय लेख औ जोख।
वेहिं विनवउं आगी होय करे जगतकर मोख॥

चार मीत जो मुहमद ठाउं। जेहिक दीन्ह जग निरमल नाउं॥
अबूबक्र सद्दीक सयाने। पहिले सिदक दीन वहि आने॥

पुनिसो उमर खिताव सुहाये। भाजन अदल दीन जो आये॥
पुनि उसमान बड़ पण्डित गुनी। लिखा पुरान न जो आयत सुनी॥
चौथे अलीसिंह बरियारू। सौंहिं ना कोइ रहा जुझारू॥
चारो एक मते एक बाना। एक पन्थ औ एक संधाना॥
वचन एक जो सुनयहिं सांचा। वही पुरान दुहूं जग बांचा॥

जो पुरान विधि पठवा सोई पढ़ति गिरन्थ।
और जो भूली आवत सो सुन लागे पन्थ॥

सेरसाह दिल्ली सुलतानू। चारहु खण्ड तपे जस भानू॥
ओही छाज छाति औ पाटा। सब राजे भुइं धरा लिलाटा॥
जात सूर औ खांड़े-सूरा। औ बुधवन्त सबै गुण पूरा॥
सूर नवाई नवखंड वहे। सातौ दीप दुनी सब नये॥
तहंलग राजखरगकरिलीन्हा। सिकंदरजुलकरनयनजोकीन्हा॥
हाथसुलेमां केर अङ्गूठी। जग कहं दान दीन्ह भरि मूठी॥
औ अति गरू भूमिपति भारी। टेक भूमि सब सृष्टि संभारी॥

देहि असीस मुहम्मद करहु जुगन जुग राज।
वादसाह तुम जगतके जग तुम्हार मुहताज॥

वरनउं सूर भूमिपति राजा। भूमि न भार सहै जो साजा॥
हयमय सेन चलय जग पूरी। परवत टूटि उड़हिं होय धूरी॥
परी रेनु होय रविहि ग्रासा। मानुख पेख लेहिं फिरि वासा॥
भुइं उड़ अन्तरिच्छ मृतमण्डा। ऊपर होय छावा महिमण्डा॥
डोले गगन इन्द्र डर कांपा। वासुकि जाय पतालहिं चांपा॥

मेरु धसमसे समुद सुखाईं। बनखंड टूटि खेह मिलि जाईं॥
अगलहिंकहं पानी गहि बांटा। पिछलेहिं कहं नहिं कांदू आंटा
जो गढ़ नयनहिं काहू चलत होय सब चूर।
जो वह चढ़े भूमिपति सेरसाह जगसूर॥
अदल कहौं प्रथमें जस होय। चांटा चलत न दूखवै कोय॥
नौसेरवां जो आदिल कहा। साह अदल सर सोहिं न रहा॥
अदल जो कीन्ह उमरकी नांई। भई यहां सगरी दुनियांई॥
परीनाथ कोइ छुवै न पारा। मारग मानुखसे उजियारा॥
गजसिंह रेंगहि एक वाटा। दोनौं पानि पियें एक घाटा॥
नीर छीर छाने दरवारा। दूध पानि सवकरे निरारा॥
धर्म्म नियाव चले सत भाखा। दूवर वरी एक सम राखा॥
सवै पृथिवी असीसे जोरि जोरिकै हाथ।
गङ्गजमुन जौलहि जल तौलहि अम्मरनाथ॥
पुनिरूपवन्त वखानौं काहा। जनवंत जगत सवैमुखजाहा॥
ससि चौदह जो दई संवारा। कवहूं जाहि रूप उजियारा॥
पाप जाय जो दरसन दीसा। जग जुहारकै देत असीसा॥
जइस भानु जग ऊपर तपा। सवै रूप वह आगी छिपा॥
अस भा सूर पुरुख निरमरा। सूर जाहि दस आकर करा॥
सौहिं दीठिकी हेरि न जाई। जेहि देखा सो रहा सिर नाई॥
रूप सवाई दिन दिन चढ़ा। विधि सुरूप जग ऊपर गढ़ा॥
रूपवन्त मनमाथे चन्द्रघाट वह वाढ़ि।
मेदन दरस लुभानी अस्तुति बिनवै ठाढ़ि॥

पुनि दातार दई जग कीन्हा। अस जग दान न काहू दीन्हा॥
बलि औ विक्रम दानि बड़ कहे। हातिम करन बतागी अहे॥
सेरसाह-सर पौंच न कोज। समुद सुमेर भंड़ारी दोज॥
दान डांग वाजे दरवारा। कीरत गई समुन्दर पारा॥
कंचन परस सूर जग भयो। दारिद भोग दसन्तर गयो॥
जो कोइ जाय एक वेर मांगा। जनम न होय न भूंखा नांगा॥
दस असुमेध जगत जो कीन्हा। दान पुन्यसर सोहिं न चीन्हा॥
अइस दानि जग उपजा सेरशाह सुलतान।
ना अस भयो न होय ना कोइ दय अस दान॥

सय्यद अशरफ जहांगीरकी तारीफ।

सय्यद असरफ पीर पियारा। जेहि मोहिं पन्थ दीन्ह उजियारा॥
लेसा हिये प्रेम करि दिया। उठी ज्योति भा निरमल हिया॥
मारग होत अंधेरा सूझा। भा उजेर सब जाना बूझा॥
खार समुद्र पाप मोर मेला। वोहित धर्म्म लीन्हकै चेला॥
उनहिं मोर कर बूड़िकै गहा। पायो तीर घाट जो अहा॥
जाकै ऐसो होय कंड़ारा। तुरत वेगि सो पावै पारा॥
दस्तगीर गाढ़ेके साथे। वह अवगाहि दीन्ह जेहि हाथ॥
जहांगीर वयविष्टी निहकलङ्क जस चांद।
वय मखदूम जगतके हो वह घरकी वांद॥

सय्यद अशरफ जहांगीरकै बेटेको तारीफ।

उनकर रतन एक निरमरा। हाजी सेख सभा गुण भरा॥
तेहिघर दुइ दीपक उजियारे। पन्थ दयी कहं दई संवारे॥
सेख मुहम्मद पून्यों करा। सेख कमाल जगत निरमरा॥
दोउ अचल ध्रुव डोलें नाहीं। मेर खखण्ड न भवा पराहीं॥
दीन्ह रूप अरु जोति गुसाईं। कीन्ह खम्भ दुइ जगकी ताईं॥
दोउ खम्भ टेकै सब महो। दोउन भार सृष्टि सब रही॥
जिन दरसन औ परसन पाया। पाप हरा निरमल भइ काया॥

मुहमद तहां निचंत पथ जिन्ह संग मुरसद पीर।
झहिरी नाव औ खिवक वेगि लागि सो तीर॥

गुरु मुहदी खिवक मै सेवा। चली उताइल जेहिकै खेवा॥
अगुवा भयो सेख बुरहानू। पंथ लाय मोहिं दीन्हों ज्ञानू॥
अलहदाद भल तिन्ह कर गुरू। दीन दुनी रोसन सुरखुरू॥
सैद मुहम्मदके वे चेला। सिद्ध पुरुख सङ्गम जिन खेला॥
दानयाल गुरु पंथ लखाई। हजरत ख्वाजखिजिर तेहिं पाई॥
भय प्रसन्न वै हजरत ख्वाजे। ऐ मेरे जियँ सय्यद राजे॥
वे सेवन में पाय करेते। अखरी जीभ प्रेम कबवरते॥

वे सुगुरू हों चेला नित विनवों भा चेर।
उन्ह इत दिखो पावं दरस गुसांई केर॥

एकनयन कवि मुहमदकने। सोई विमोहा जें कवि सुने॥
चांद जइस जग विधि अवतारा। दीन्ह कलङ्क कीन्ह उजियारा॥
जग सूझा एकै नयनाहां। उआ सूक जस नखतन माहां॥
जौलहि अंबहि डाभ न होय। तौलहि सुगंध बसाय न कोय॥
कीन्हि समुद्र जो पानी खारा। तौ अति भयो असूझि अपारा॥
जो सुमेरु तिरसूल विनासा। भा कंचनगढ़ लाग अकासा॥
जो लहि घरी कलंक नहिं परा। कांच होय नहिं कंचन करा॥

एकनयन जस दरपन औ निरमल तेहि भाव।
सब रुपवन्ती पाउं गहि मुख जोवनकी चाव॥

चार मीत कवि मुहमद पाये। जोरि मिताई सर पहुंचाये॥
युसुफ मलिक पण्डित बहुग्यानी। पहिली बात भेद उन जानी॥
पुनि सलार कादम मतिमाहां। खांड़े सूर उभानत वाहां॥
मियां सलोनि सिंह वरियारू। वीर कहत रन खरग जुझारू॥
सेख बड़ी बड़ि सिद्धि वखाना। कै अदेस सिद्धी वड़ वाना॥
चारो चतुरदसा गुन पढ़े। औ सिंह जोग गुसांई गढ़े॥
वृच्छ होय जो चन्दन पासा। चन्दन होय विविध तेहि वासा॥

मुहमद चारो मीत मिलि भये जो एकै चित्त।
यह जग साथ जो वैठे वह जग बिछुरन कित्त॥

जायसनगर धर्म्म अस्थानू। तहां जाय कवि कीन्ह बखानू॥
औ बिनती पण्डित न सो भजा। टूटि संवार मेरु बहु सजा॥
हौं पण्डितन कैर पछलगा। कछु कहि चला तबल डीडगा॥
हिय भण्डारंग अहे जो पूंजी। खोली जीभ तारकी कूंजी॥

रतन पदारथ बोलै बोला। सुरस प्रेममधु भरी अमोला ॥
जेहिकीबोल विरहकी घाया। कहं तेहिभूख कहांतेहिमाया ॥
फेरे भेव रहै भा तपा। धूर लपेटा मानिक छपा ॥

मुहमद कवि जो प्रेमकी नातन रकत न मांसु।
जें मुखदेखा सो हंसा सुनि तेहि आयो आंसु ॥

सन नवसै सत्ताइस अहै। कथा अरम्भ बेनकवि कहै ॥
सिंहल दीप पदमिनी रानी। रतनसेन चित्तौरगढ़ आनी ॥
अलादीन देहली सुलतानू। राघो चेतन कीन्ह वखानू ॥
सुना साहगढ़ छेंका आई। हिन्दू तुरुकहिं भई लड़ाई ॥
आदि अन्तकी जस कथा अहै। लिखि भाखा चौपाई कहै ॥
कविअ व्यास रस कंवला पूरी। दूरहिं नेरे नेरे दूरी ॥
नेरे दूर फूल जस कांटा। दूर जो नेरे जस गुड़ चांटा ॥

भंवर आय वनखण्ड सो लेइ कमलकी बास।
दादुर वास न पावै फलहि जो आछौ पास ॥

सिंहल दीप कथा अब गाऊं। औ सुपदमिनी वरणि सुनाऊं ॥
निरमल दरपन भांति विसेखा। जिन्ह जस रूप सो तैसो देखा ॥
धनि सो दीप जिन्ह दीपक वारे। औ पदमिनी जो दई संवारे ॥
सात दीप वरने सब लोगू। एको दीप न वहिसर जोगू ॥
दया दीन नहिंतस उजियारा। सरन् दीप सर होय न पारा ॥
जम्बू दीप कहूं तस नांई। लङ्कदीप सरपोच न झांई ॥
दीपगुस सहल आरनपरा। दीपमहो सिंहल वांस हरा ॥

सब संसार औ पिरथिमी आधी सातो दीप।
एक दीप नहिं आतिम सिंहलदीप समीप॥
गन्धवसेन सुगन्ध नरेसू। सो राजा वह ताकर देसू॥
लङ्का सुना जो रावन राजू। तेहु जाहि वर ताकर साजू॥
छप्पन कोटि कटक दल साजा। सबै छत्रपति औ गढ़राजा॥
सोरह सरस घोड़ घुड़सारा। स्यामकरण जस वांक तुषारा॥
सात सहस हत्थी सिंहलो। दूभि कैलास ऐरापति बलो॥
अस्वपतिक सिरमौर कहावे। गजपतीक आंकुस गज नावे॥
नरपतीक कहुं और नरिन्दू। भूपतीक जग दूसर इन्दू॥
ऐसो चकवे राजा चहुं खण्ड भू होय।
सबै आय सिर नावहीं सरवर करो न कोय॥
जाहि दीप नेरे भा जाय। जनु कैलास तीर भा आय॥
घन अंबराउ लाग चहुं पासा। उठी भूमि हति लागि अकासा॥
तरवर सबै मलयगिरि लाधी। भइ जग छांहि रयनि है आधी॥
मिलो सुनेर सुहाई छाहां। जेठ जाड़ लागय तेहिमाहां॥
वही छाहिं रयनि है आवै। हरियर सबै अकास दिखावै॥
पन्थक जो पहुंचे सहि घामू। दुख विसरे सुख होय विसरामू॥
जिन्ह वह पाई छाहिं अनूपा। बहुरिन आय सही यहि धूपा॥
अस अंबराउं सघन घन वरनि न पारों अन्त।
फरी फुलो छवों ऋतु जानहु सदा वसन्त॥
फरे अम्ब अति सघनसुहाये। औ जस फरी अधिक सिर नाये॥
कटहर दार पेड़ सो पाके। वड़हरसो अनूप अति ताके॥

खिरनी पाकर खांड़ अस मीठी। जामुन पाक भंवर अस दीठी॥
तरवर फरे फरे खरहरे। फरे जानि इन्द्रासन परे॥
पुनि महुवा चुव अधिक मिठासू। मधु जस मीठ पुहुप जस वासू॥
और खजहजा उन्हकर नाउं। देखा सब रानी अंवराउं॥
लागि सबै जस अमिरतु साखा। रहै लुभाय सोई जो चाखा॥

लवंग सुपारी जायफल सब फल फरे अपूर।
चास पास घन ईमली औ घन तार खजूर॥

बसहिं पंखि बोलहि बहु भाखा। करहिं हुलास देखिके साखा॥
भोर होत वासहिंचहिचुहीं। बोलहिं पण्डुक "एकै तुहीं"॥
सारीसुत्रा जो रहचहिं करहीं। करहिं परेवा औ करोरहीं॥
"पिव पिव"कर जो लाग पपीहा। "तुही तुही"कर गड़रूकीहा॥
कुहूकुहू कर कोयल राखा। औ भिंगराज बोल बहु भाखा॥
दही दही करि महरि पुकारा। हारिल अपनी बोली हारा॥
कुहकहिं मोर सुहावन लागा। होय कुराहर बोलहिं कागा॥

जनवंत पाखी बनके फिरि बैठे अंबराउं।
अपनी अपनी भाखना लीन्ह दईकर नाउं॥

पैग पैगपर कुंवा बावरी। साजी बैठक औ पावरी॥
और कुण्ड बहु ठावहिं ठाउं। सब तीरथ औ तिहिके नाउं॥
मठ मण्डप बहुं पास संवारे। तपी जपी सब आसनमारे॥
कोइ सु रिसुर कोइ सन्यासी। कोई रमजती कोई विसवासी॥
कोई ब्रह्मचर्जपथ लागी। कोई सो दिगम्बर अचीन्ह नारी॥

कोइ सुमहेसुर जोगी जती। कोइ एक परखि देवो सती॥
कोइ सरसुती सन्त कोइ जोगी। कोइ निरास पथ वैठि वियोगी॥

सेवरा खेवना वानप्रस्थी सिद्ध साधक अवधूत।
आसन मारे वैठि सब पांच आतमा भूत॥

मानसरोवर वरनौं काहा। भरा समुद्र अस अति अवगाहा॥
जल मोती अस निरमल तासू। अमिरतवरण कपूरसुवासू॥
लङ्कदीपकी सिला अनाई। बांधा सरवर घाट बनाई॥
खण्ड खण्ड सीढ़ी भुंइ घेरे। उतरहिं चढ़हिं लोग चहुं फेरे॥
फुला कमल रहा हे राता। सहस सहस पच्छिनके छाता॥
उलटहिं सीप मोति उतराहीं। चुनहिं हंस औ केलि कराहीं॥
खनि पतार पानी तहं काढ़ा। छीरसमुद्र निकस तहं ठाढ़ा॥

ऊपर पाल चहूंदिस अमिरत-फल सब रूख।
देखिरूप सरवरका गइ पियास औ भूख॥

पानि भरी आवहिं पनिहारीं। रूप सरूप पदमिनी नारीं॥
पद्मगन्ध तिन अङ्ग बसाहीं। भवंर लागि तिनसङ्ग फिराहीं॥
लङ्क सिंहिनी सारंगनयनी। हंसगामिनी कोकिलवयनी॥
आवहिं भुण्ड सो पांतिहि पांती। गवन सुहाय सुभांतिहि भांती॥
कनककलस मुखचन्द दिपाहीं। रहसि केलिसि आवहिं जाहीं॥
जासौं वै हेरें चख नारी। वांक नयन जनु हनहिं कटारी॥
केस मेघवर सिरता पाहीं। चमकहिं दसन बीजुकी नाईं॥

माथे कनक-गागरी आवहिं रूप अनूप।
जेहिकी ये पनिहारी तौ रानी केहि रूप॥

तालतलावा वरनि न जाहीं। सूझ वारपार कुछ नाहीं॥
फूली कुमुद्दि केति उजियारे। मानहुं उघी गगनमहं तारे॥
उतरहिं मेघ चढ़हिं ले पानी। चमकहिं मच्छ बीजुकी बानी॥
तेरहिं पंख सुसङ्गहि सङ्गा। सेत पीत राती बहु रंगा॥
चकई चकवा केलि कराहीं। निशा विछोह दिनहिं मिलिजाहीं॥
करलहिंसारस करहिं हुलासा। जीवन मरन सुएकहिंपासा॥
कम्पासुआ ढेंक बक लेदी। रही अपूर मीन जल भेदी॥

नग अमोल तेहि तालहि दिनहिं वरहिं जस दीप।
जो मरजिया होय तेहि सो पावे वह सीप॥

आसपास बहु अमिरत वारी। फरीं अपूर होय रखवारी॥
नारंग नींबू तुरंज जंभीरा। औ वदाम बहु वेर अंजीरा॥
गुलगुल तुरंज सदा फरफरे। नारंग अति राती रसभरे॥
किसमिस सेव फरे नौ वाता। दाड़िम दाख देखि मन राता॥
लाग सुहाई हरफारयौरी। उनय रहीं केरा की घौरी॥
फरी तूत कमरख औ न्योजी। राय करौंदा वेर चिरौंजी॥
सुगन्धराव छुहारा दीठे। और खजहजा खाटे मीठे॥

पानि देहिं खंडवानी कुवहिं खांड़ नहिं मेल।
लागी घरीं रहंटकी सींचहिं अमिरत वेल॥

पुनि फुलवारि लाग चहुंपासा। वृच्छ वेधि चन्दन भइ वासा॥
बहुत फूल फूली घन बेली। क्यौंड़ा चम्पा गोंद चमेली॥
सुरङ्ग गुलाल कदम औ गूजा। सुगन्ध बकौरी गन्धव पूजा॥
जाही जही बगचन लावा। पुहुप सुदरसन लाग सुहावा॥

नागेसर सदवर्ग हवारी। औ सिङ्गारहार फुलवारी॥
सुमन जदे बहु खिली सेवती। रूपमञ्जरी और मालती॥
बोलसिरी बेली औ करना। सबै फुल फुले बहु वरना॥

तेहि सिर फ ल चढ़हिं वै जेहि माथे मन भाग।
आछेन्ह सदा सुगन्ध वहि जनु वसन्त औ फाग॥

सिंहलनगर दीख पुनि वसा। धनिराजा अस जाकर दसा॥
ऊंचौ पंवरी ऊंच उड़ासा। जनु कैलास इन्द्रकर वासा॥
राउ रङ्क सब घर घर सुखी। जो देखि सो हंसता-मुखी॥
रचि रचि साजे चन्दन चूरा। मोती अगर मेद करपूरा॥
सब चौपारहिं चन्दन-खंभा। वहिं राजा तव वैठी सभा॥
जनु सभा देवतहिं की जुरी। परी दीठि इन्द्रासन पुरी॥
सबै गुनी औ पण्डित ज्ञाता। संस्किरत सबकै मुख राता॥

अलखहिं पन्थ संवारें जनुग्रिवलोक अनूप।
घर घर नारि पद्मिनी मोहहिं सब अछरनकै रूप॥

पुनि देखी सिंहलकी वाटा। नवो निदि लच्छो सब हाटा॥
कनक हाट सब कुहकहिं लीपी। वैठि महाजन सिंहलदीपी॥
रचो हतोड़ा रूप न ढारे। चित्र कटाव अनेक संवारे॥
सोन रूप भल भयो पसारा। धवल सिरी पोतहिं घरवारा॥
रतन पदारथ मानिक मोती। हीरा लाल संवारे जोती॥
औ कपूर वेना कस्तूरी। चन्दन अगर रहा भरि पूरी॥
जिन यहिहाट न लीन्हविसाहा। तिनकहं आन हाटकितलाहा॥

कोई करै बिसाहना काहू केर बिकाय।
कोई चलै लाभ सों कोई मूर गंवाय॥

पुनि सुसिंगारहाट भल देषा। कियै सिंगार बैठि तहं वेषा॥
मुख बीरौ सिर चीर कुसुम्भी। कानन कनक जड़ाऊ खुम्भी॥
हाथ बीन सुनि मृगा भुलाहीं। नरमोहहिं सुनि पैग नजाहीं॥
भौंहधनुष तेहि नयन अहेरी। मारहिं बान सान सों हेरी॥
अलक़ कपोल डोल हंस देहीं। लाय कटाच्छ मार जनु लेहीं॥
कुच कंचुक जानहिं जग सारे। अञ्चल दीन्ह सुभावहिं टारे॥
किते खिलार हार तेहि पांसा। हाथ झारि उठि चलै निरासा॥

चेटक लाय हरहिं मन जबलहि है गंठिफेट।
सांट नाट पुनि भई वटाऊ ना पहिंचान न भेट॥

लेकै फूल बैठि फुलहारी। पान अपूरब धरै संवारी॥
सोंधा सबै बैठिले कांधे। भलै कपूर खरेरौ बांधे॥
कतहूं पण्डित पढ़ें पुराना। धर्मपन्थकर करहिं बखाना॥
कतहूं कथा कहै कुछ कोई। कतहूं नाच कूद भल होई॥
कतहूं चरहटा पंखीलावा। कतहूं पाखंड नाच नचावा॥
कतहूं नाद सबद होइ भला। कतहूं नाटक चेटक कला॥
कतहूं काहु ठगविद्या लाई। कतहूं मानुख कीन्ह बौराई॥

चरपत चोर दूत गठछोरा मिले रहहिं तेहि पांच।
जो बहुभांति सजग भा अगमन गठ ताकर पै बांच॥

पुनि आई सिंहल गढ़ पासा। का बरनउं जनु लाग अकासा॥
तरहिं करहिं बासुकिकी पौठी। ऊपर इन्द्रलोकपर दीठी॥

परा खोह चहुंदिशि सब बांका। कांपै जांघ जाय नहिं झांका॥
अगम असूझ देखि डर खाई। परै सो सप्त पतारहिं जाई॥
नव पवंरी बांकी नवखण्डा। नवो जो चढ़ै जाय ब्रह्मण्डा॥
कञ्चन कोट जड़े नग सीसा। नखतहिं भरी बीजु पुनि दीसा॥
लङ्का चाहि ऊंच गढ़ ताका। निरखि न जाय दीठि मन थाका॥

हिय न समाय दीठि नहिं पहुंचै जानहिं ठाढ़ सुमेरु।
कहं लग कहों उंचाई कहं लग बरनउं फेरु।

तवगढ़ बनिज चले जगसूरू। नाहिंत होय बाजि रथ चूरू॥
पंवरीं नवों बज्रकी साजे। सहस सहस तहं बैठे पाजे॥
फिरें पांच कुतवार सुभंवरी। कंपै पांउ चापत वे पंवरी॥
पंवरिहिं पंवरि सिंहग गाढ़े। डरपहिं राय देखि तहं ठाढ़े॥
बहु बनाव वे नाहर गढ़े। जनु गाजहिं चाहहिं सिर चढ़े॥
टारहिं पूंछ पसारें जीहा। कुञ्जर डरहिं कि गञ्जर लीहा॥
कनकसिलागढ़ सीढ़ी लाई। जगमगाहिं गढ़ ऊपर ताई॥

नवोंखण्ड नवपंवरी औतहं बज्र केवार।
चार बसेरे सो चढ़े सत सो उतरे पार॥

नव पंवरीपर दसों दुवारा। तेहिपर बाजि रहा घरियारा॥
घड़ीसो बैठि गिनै घरियारी। भरीसु अपनी अपनी बारी॥
जोहि घड़ी पूजे वह मारा। घड़ी घड़ी घरियार पुकारा॥
परा जो डांड़ जगत सब डांड़ा। का निचिंत माटीकर भांड़ा॥
तुम तेहि चाक चढ़ेहो कांचो। अवहिं न फिरी न थिर ह्वै बांची

घड़ी जो भरी घटी तुम आज। का निचिन्त सोवे जो वटाज॥
पहरहि पहर गजर नित होई। हिया न सोगा जाग न सोई॥
मुहमद ज्यों ज्यों जल भरत रहंट घड़ीकी रीति।
घड़ी जो आई ज्यों भरी ढरी जन्म गा वीति॥
गढ़पर नीर छीर दुइ नदी। पानि भरें जैसे दुरपदी॥
और कुण्ड एक मोतीचूरू। पानी अमिरतु कीच कपूरू॥
वहांका पानी राजा पिया। वृद्ध होय नहिं जबलग जिया॥
कञ्चनवृच्छ एक तेहि पासा। जस कल्पतरु इन्द्र-कैलासा॥
मूल पतार स्वर्ग वह साखा। अमरवेलि को पाव को चाखा॥
चन्द्र पात औ फूल तराई। होय उजियार नगर जहंताई॥
वै फल पावै तप करि कोई। वृद्ध खाय नव जोवन होई॥
राजा भये भिखारी सुनि वह अमिरत भोग।
जें पावा सो अमर भा न कुछ व्याधि नहिं रोग॥
गढ़पर वसहिं चार गढ़पती। अस्वप गजप भुवप नरपती॥
सवक धौरहिर सोने साजा। औ अपने अपने घर राजा॥
रूपवन्त धनवन्त सभागी। परस-पखान-पवंर तेहि लागी॥
भोग परास सदा सब माना। दुख चिन्ता कोई नहिं जाना॥
मंदिर मंदिर सवके चौपारीं। वैठि कुंवर सव खिलहिं सारीं॥
पांसा ढरहिं खेल भल होई। स्वर्गवान सर पूज न कोई॥
भाट वरन कहि कीरति भली। पावहिं हस्थि घोड़ सिंहली॥
मंदिर मंदिर सवकी फुलवारी चोवा चन्दनवास।
निसि दिन रहै वसन्त वहं छह ऋतु वारह मास॥

पुनि चलि देखा राजदुवारा। मानुख फिरहिं पाय नहिं बारा॥
हस्ति सिंहली बांधे वारा। जनु सजीव सब ठाड़ पहारा॥
कवन्यो सेत पीत रतनारे। कवन्यो हरे धूम अस कारे॥
वरनै वरन गगन जस मेघा। उठहिं गगन वैठि जनु ठेघा॥
सिंहलके वरने सिंहले। इक इक चाहसो इक इक वले॥
गिरि पहाड़परवतकहिंपेलहिं। ब्रच्छ उपारि भारि मुख मेलहि
मत्त मतंग सब गरजहिं बांधे। निसि दिन रहहिं महावत कांधे॥

धरती भार अंगोहो पांव धरत उठ हाल।
कुर्महि टूटि भूंइ फाटी तेहि हस्तिहिको चाल॥

पुनिवांधे उजियार तुरङ्गा। का वरनउं जस उनके रङ्गा॥
लेल समन्द चाल जग जाने। हांसल वोरहि क्याहि वखाने॥
परी कुरङ्ग महो बहुभांती। करर कोकलह बलह सुपांती॥
तीख तुखार चांद औ वांके। तड़पहिं तबहिं वाजि विन हांके॥
मनते अगमन डोलहिं वागा। देत उसास गगन सिर लागा॥
पावहिं सांस समुदपर धावहिं। वूड़ि न पांव पार ह्वे आवहिं॥
थिर न रहें रिस लोह चवाहीं। भाजहिं पूंछ सीस उपराहीं॥

अस तुखार सब देखि जनु मनके रथवाहि।
नयन पलक पहुंचावहीं जहं पहुंचा कोइ चाहि॥

राजसभा सब देख वईठे। इन्द्रसभा जनु पर गइ डीठे॥
धनि राजा अस सभा संवारी। जानहुं फूलि रही फुलवारी॥
मुकुटबन्द सब वैठे राजा। दर निसान सब जेहिके साजा॥
रूपवन्त मन दिपे लिलाटा। माथे छात वैठि सब राजा॥

जानो कमल सरोवर फूले। सभाकि रूप देखि मन भूले ॥
पान कपूर मेद कस्तूरी। सुगंध बास भरि रही अपूरी ॥
मांझ ऊंच इन्द्रासन साजा। गन्धवसेन बैठि तहं राजा ॥

छत्र गगनलग ताकर सूर्य्य दिपै तस आप।
सभा कमल जनु बिगसो माथे बड़ परताप ॥

साजा राजमंदिर कैलासू। सोनेका सब भूमि अकासू ॥
सातखण्ड धवराहर साजा। वही संवार सकै अस राजा ॥
हीरा ईंट कपूर गिलावा। औ नग लाय सरगु लय लावा ॥
जनवंत सबै उरेह उरेहे। भांति भांति नग लाग उवेहे ॥
भा कटाव सब आनहु भांती। चित्र कटाव सो पांतहि पांती ॥
लाग खंभ मनि-मानिक-जरे। निसि दिन रहै दीप जनु बरे ॥
देखि धौरहर कर उजियारा। छिपगये चांद सुरिज औ तारा ॥

साजी साज बैकुण्ठ जस तस साजो खंड सात।
बौहर बौहर भाव तस खंड खंड ऊपर जात ॥

बरनउं राजमंदिर रनिवासू। अछरहिं भरा जान कैलासू ॥
सोरह सहस पद्‌मिनी रानी। एक एकते रूप वखानी ॥
अतिसरूप औ अति सुकुमारी। पान फूलकी रहहिं अधारी ॥
तेहि ऊपर चम्पावति रानी। महासरूप पाट-परधानी ॥
पाट बैठि रहि किये सिंगारू। सब रानी वहं करहिं जुहारू ॥
नित नव रङ्ग अङ्गमा सोई। प्रथमै वयस न सिरपर कोई ॥
सिंहलदीपमहं जेती रानी। तिनमहं कनक सुवारह वानी ॥

कुंवर बतीसो लच्छनी अस सबमांह अनूप।
जनवंत सिंहलदीपी सबै बखानी रूप॥

चम्पावत जो रूप मनभाहां। पद्मावतिकी ज्योतिकि छाहां॥
भइ चाहै अस कथा जो होनी। मेटि न जाय लिखी जस होनी॥
सिंहलदीप भयो तब नाजं। जो अस दिया बरा तेहि ठाजं॥
प्रथम सो जोति गगन निरमई। पुनि सुपिता माथे मन भई॥
पुनि वह जोति मात घट आई। तिनहिं उदर आदर बहु पाई॥
जस अवधान पूर ह्वै मासू। दिन दिन हिये होय परकासू॥
जस अञ्चल महं छिपरी दिया। तस उजियार दिखावै हिया॥

सोने मंदिर संवारा औ चन्दन सब लीप।
दिया जो मन सिवलोकमहं उपजा सिंहलदीप॥

भे दसमास पूरि भइ घरी। पद्मावति कन्या अवतरी॥
जानो सूर्जकिरन हुत गाढ़ी। सूरजकिरन घाट वह वाढ़ी॥
भा निसिमहं दिनकर-परकासू। सब उजियार भयो कैलासू॥
इतनी रूपमूर्त्ति परगटी। पून्यो ससि सुखीन ह्वै घटी॥
घटतहि घटत अमावस भयी। दिन दुइ लाजगाड भुंइ गयी॥
पुनि जो उठी दुइज ह्वै उयी। ससि निकलङ्क विधिहि निरमयी॥
पद्मगन्ध बेधा जग वासा। भंवर पतङ्ग भमै चहुंपासा॥

इतनी रूपमई कन्या जेहि स्वरूप नहिं कोय।
धन सुदेस रुपवन्ता जहां जन्म अस होय॥

भई छठिरात छठी सुखमानी। रहस कूदसो रयन विहानी॥
भा विहान पण्डित सब आये। काढ़ि पुरान जन्म अरथाये॥

उत्तम घरी जन्मभा तासू। चांद उआ भुंइ दिपा अकासू॥
कन्याराशि उदय जग किया। पद्मावती नाम जस दिया॥
सूर पुरुषसों भयो गुरेरा। किरनयाम उपजा जगहीरा॥
तेहिते अधिक पदारथकरा। रतनजोति उपजा निरमरा॥
सिंहलदीप भयो अवतारू। जम्बूदीप जाय जमवारू॥

राम अयोध्या उपजे लखनवतीसों सङ्ग।
राजाराउ रूप सब भूलेदीपक जइस पतङ्ग॥

आय जन्मपत्री जो लिखी। दे आसीस फिरे जोतिखी॥
पांच वरखमहं भई जो बारी। दीन्ह पुरान पढ़े वे सारी॥
भइ पद्मावति पण्डित गुनी। चहूं खण्डके राजहिं सुनी॥
सिंहलदीप राज घर वारी। महासरूप दई अवतारी॥
इक पदमिनि औ पण्डित पढ़े। वहिकहं जोग गुसांई गढ़े॥
जाकहं लिखी लच्छि अस होनी। सो अस पाव पढ़ी औ लोनी॥
सप्तदीपके वर जो आवहिं। उत्तर पावहिं फिर फिर जावहिं॥

राजा कहै गर्ब्ब किये हौं इन्द्र शिवलोक।
को सरवर है मोसों कासों करौं विरोक॥

बारह वरखमाहं भइ रानी। राजें सुना संजोग सयानी॥
सातखण्ड धवराहर तासू। सो पदमिनिकहं दीन्ह उड़ासू॥
औ दीन्हीं संग सखी सहेली। जो संगकरें रहस रस केली॥
सबै नवल पीसङ्ग न सोई। कमल पास जनु विगसी कोई॥
सुआ एक पद्मावति ठाऊं। महापंडित हीरामनि नाऊं॥

दई दीन्ह पङ्खिहि अस जोती। नयनरतन मुखमानिकमोती॥
कञ्चनवरन सुआ अतिलोना। मानो मिला सुहागहि सोना॥

रहहिं एक संगदोउ पढ़ैं शास्त्र औ वेद।
पढ़ना सीस डुलावही सुनत लागत सभेद॥

भई अनन्त पद्मावति बारी। रचि रचि विधि सब कला संवारी॥
जग वेधा तेहि अङ्ग सुवासा। भंवर आय लुब्धे चहुंपासा॥
वेनी नाग मलयगिरि पैठी। ससि माथे होय दुइज पईठी॥
भौहैं धनुष साधि सर फेरे। नयन कुरङ्ग भूल जनुहेरे॥
नासिक कीर कमल मुख सोहा। पद्मिनि रूप देखि जग मोहा॥
मानिक अधर दसन जनु हीरा। हिय हुलसे कुच कनक जंभीरा
केहरि लङ्क गवन गज हरी। सुर नर देखि माथ भुंइ धरी॥

जग कोउ दीठि न आवै अछरन होय अकास।
जोगी जती सन्यासी तप साधहिं तेहि आस॥

राजें सुना दीठि भइ आना। बुधि जो देइ संग सुआ सयाना॥
भयो रजायसु मारहिं सुआ। सबरें सुना चांद जहं उआ॥
सतु सुआके नाऊ बारी। सुनि धाये जस धाय मंजारी॥
तबलग रानी सुआ छिपावा। जबलग आब मंजारि न पावा॥
पिताकि आयसु माथे मोरे। कहो जाय विनवै कर जोरे॥
पङ्खि न कोई होय सुजानू। जाने भुगति कि जानि उड़ानू॥
सुआ जो पढ़े पढ़ाये वयना। तेहि कत बध जेहि हीये नयना॥

मानिक मोती देखावहु हिये न ज्ञान कर लेय।
दाड़िम दाख छांड़िकै आंवठौर फर लेय॥

बैठी फिरी उतर अस पावा। बिनवा सुधी हिंधे डर खावा॥
रानी तुम जुग जुग सुख पाऊ। होइ अज्ञा बनवासकहं जाऊ॥
मोती जो मलीन होय कला। पुनिसो पानि कहां निरमला॥
ठाकुर अन्त चहो जेहि मारा। तेहि सेवककहि कहां उबारा॥
जेहि घर काल-मंजारी नाचा। पङ्खिहि नाउं जीवनहिं बांचा॥
मैं तुम राज बहुत सुख देखा। जो पूंछहि दिये जाय न लेखा॥
जो इच्छा मन कीन्ह सु जेंवा। यह पछताव चल्यों बिन सेंवा॥

मार सोई निसोगा डरे न अपनी दोस।
केला अकेल करे का जो भयो बेर परोस॥

रानी उतर दीन्ह कै मया। जो जिव जाय रहै किमि कया॥
हीरामनि तू प्रान-परेवा। धोखनलाग करत तेहि सेवा॥
तुहिं सेवा बिछुरन नहिं आंखों। पीञ्जर हिये घालिकै राखों॥
हौं मानुख तू पङ्खि पियारा। धरम पिरीति तहां को मारा॥
का पिरीति तनमाहं बिलाय। सोई प्रीति जिय साथ जो जाय॥
प्रीति भारलो हिये न सोचू। वही पन्थ भल होय कि पोचू॥
प्रीतिपहाड़ भार जो कांधा। कित तेहि छूट लाय जिव बांधा॥

सुआ न रहै खुरक जी अबहूं काल सो आव।
सतु अहै जेहि करिया कबहुसो बूड़ी नाव॥

———

स्नानखण्ड।

एक दिवस कवन्यो तहं आय। मानसरोवर चली अन्हाय॥
पद्मावति सब सखी बुलाई। जनु फुलवारि सबै चलि आई॥
कोइ चम्पा कोइ गोंद सहेली। कोइ सुकेत करुणा रसबेली॥
कोइ सुगुलाल सुदरसन राती। कोइ वकाउ कोइ वकचन भांती॥
कोइ सो बोलसिरि पुहपावती। कोइ जाहिजूही सेवती॥
कोइ सुमन जई ज्यों केसर। कोइ सिङ्गारहार नागेसर॥
कोइ कूजा सदवर्ग चंबेली। कोई कदम सुरसारसबेली॥

चलीं सबै मालती सङ्गहि फूले कमल कुमोद।
वेध रही गुण गन्धरव वास वरमला मोद॥

खेलत मानसरोवर गई। जाय पालपर ठाढ़ी भई॥
देखि सरोवर हंसली केली। पद्मावंति सौं कहहिं सहेली॥
ए रानी मन देखु बिचारी। यहि नैहर रहना दिन चारी॥
जबलग अहे पिताकर राजू। खेलि लेहु जो खेलहि आजू॥
पुनि सासुर हम गवंनव काली। कित हम कितयह सरवर पाली॥
कित आवन पुनि आपन हाथा। कित मिलके आउब एक साथा॥
सासु ननंद बोलहि जिय लेहीं। दारुन ससुर न निसरे देहीं॥

पिउ पियार सब ऊपर सो पुनि करे वह काहि।
तेहि सुख राखहि की दुख बह कस जन्म निवाहि॥

सरवर तीर पद्मिनी आई। खोपा छोड़ि केश बिखराई॥
ससिमुख अङ्ग मलीगर रानी। तामहं भाप लीन्ह अरधानी॥
उनई घटा परा जग छाहां। ससिकी सरन लीन्ह जनु राहा॥
छिपि गये दिन भानुकी दसा। तेहि निशि नखत चांद परगसा॥
भूल चकोर दीठि तेहि लावा। मेघघटामहं चन्द दिखावा॥
दसन दामिनी कोकिल भाखें। भौंहं धनुष गगन लेराखें॥
नयन खंजन दुइ केल करेहीं। कुच नारंग मधुकर रस लेहीं॥

सरवर रूप बिमोहा हिय हिलोर कर लेइ।
पाउं छुवे मग पांउ तन मन लहरें देइ॥

धरी तीर सब कंचुक सारी। सरवर महं पैठीं सब वारी।
पानी तीर जानि सब बेलें। झुलसहिं करहिं कामकी केलें॥
करल केश विखहर विखभरे। लहरे लेहिं कमलमुख धरे॥
नवल वसन्त संवारे करी। होय प्रकट जानहु रसभरी॥
उठी कोप जस दाड़िम दाखा। भई अनन्त प्रेमकी साखा॥
सरवर नाहिं समय संसारा। चांद नहाय बैठि लिये तारा॥
धन सो नीर ससि तरई जई। अब कित दीठि कमल औ कोई॥

चकई बिछुर पुकारी कहां मिलब हो नाह।
एक चन्द निसि सरगमहं दिन दूसर जलमांह॥

लागी केलि करें मंझ नीरा। हंस लजाय बैठि ह्वै तीरा॥
पद्मावति कौतुक कहं राखि। तुमहिं ससि होहिं तरायनहिं राखि
बाद मेलके खेल पसारा। हार देव जो खेलत हारा॥
संवरहिं सांवर गोरहिं गोरी। आपन आपन लीन्ह सुजोरी॥

बूझौ खेल खिलौ एकसाथा। हारि न होय पराये हाथा॥
आजहिं खेल बहुरि कित होय। खेलगई कित खिलै कोय॥
धनि सो खेल खेल रस प्रेमा। रवताई और कुशल छेमा॥

मुहम्मद बार जो प्रेमकी ज्यों भावे त्यों खेल।
तेलहिं फूलहिं बास ज्यों होय फुलायल तेल॥

सखी एक तैं खेलन जाना। भइ अचेत मनहार गंवाना॥
कमलडार गहि भइ बिकरारा। कासों पुकारों आपन हारा॥
कित खिलै आयो एक साथा। हार गवाय चल्यों ले हाथा॥
घर पैठत पूंछव यह हारू। कौन उतर पाउब पैसारू॥
नयन सीप आंसू तस भरे। जानहु मोति गिरहिं सब ढरे॥
सखिन कहा बौरी कोकिला। कौन पानौं जेहि पवन नहिंहिला
हार गंवाय सो ऐसे रोवा। हरे हेराय लेव जो खोवा॥

लागीं सब मिलि हेरी बूड़ बूड़ यक साथ।
कोई उठी मोती ले काहूं घोंघा हाथ॥

कहा मानसर चहा सुपाई। पारस रूप यहां लगि आई॥
भा निरमल तेहि पाय न परसे। पावा रूप रूप के दरसे॥
मलौ समीर बास तन आइ। भासीतल तनतपन बुझाई॥
ना जानौं कौन पवन ले आवा। पुण्यदशा भइ पाप गंवावा॥
ततछन हार बेगि उतराना। पावा सखहिं चन्द बिहसाना॥
बिकसा कमल देखि ससिरेखा। भई तेहि जप जहां जो देखा॥
पावा रूप रूप जस चहा। ससिमुख सब दरपन ह्व रहा॥

नयन जो देखि कमल भयि निरमल नीर सरीर।
हरत जो देखि हंस भयि दसन जोति नग हीर॥
पदमावति तहं खेल दुलारी। सुआ मंदिरमहं देखि मंजारी॥
कहेसि चलौं जौ लहत न पांखा। जिव लै उड़ा ताक बन ढांखा
जाय परा बनखंड जिव लीन्हा। मिले पंख बहु आदर कीन्हा॥
आन धरी आगी फर साखा। भुगति न मिटी जबलहि राखा॥
पाय भुगति सुख मनमें भयो। दुख जो अहा बिसर सब गयो॥
ए गुसाइं तू अइस विधाता। जनवंत जिव सबका भुक-दाता॥
पाथर महं नहिं पतंगविसारा। जहं तहं संवर दीन्ह तु इंचारा
तौलहि साग बिछोहकर भोजन पड़ा न पेट।
पुनि बिसरा भा संवरना जनु सपने भइ भेंट॥
पदमावति पहं आय भंडारी। कहिसि मंदिरमहं परी मंजारी॥
सुआ जो उतर देत अहा पूंछा। उड़गा पिंजर न बोले छूंछा॥
रानी सुना जो सुख सब गयो। जनु निसि परी अस्त दिन भयो॥
गहने गही चन्दकी किरा। आंसु गगन जस नखतहिं भरा॥
टूटि वार सरवर वह लागी। कमल बूड़ि मधुकर उड़ भागी॥
यहि बिधि आंसु नखत हो चुये। गगन छांड़ सरवरमहं उये॥
भरहिं चुवहिं मोतिनकी माला। अवस कैत वांधा चहुपाला॥
उड़गा सोठा कहं बसा खोज सखी सो तास।
वहै धर्ती की सरगका पवन न पावै वास॥
चहूं पास समभावहिं सखी। कहांसु अब पावेगी पखी॥
जबलहिं पिंजर अहा परेवा। अहा बांध कीन्हेसि नित सेवा॥

तेहि बन घन जो छूटिपावा। पुनि फिर बांद होय कित आवा॥
वै उड़ान फुरहरी खाई। जो भा पंख पांख तन लाई॥
पिंजर जेहक सौंप तेहि गयो। जो जाकर सो ताकर भयो॥
दस बाटें जेहि पिंजरमाहां। कैसे बांच मंजारीपाहां॥
ये धर्त्ती अस केतन लीले। अस्वपति गजपति बहु धरकीले॥

जहं न राति नहिं दिवस है तहां न पान न खान।
तेहि बन सुअटा ह्वै वसा फेरि मिलावै आन॥

सुवें तहां दिनदस कल काटी। आयो व्याध ढका लै टाटी॥
पैग पैग भुइं चापत आवा। पंखिहि देखि सवै डर खावा॥
देखो कुछ अचरज अनभला। तरवर एक आवत होचला॥
यह बन रहत गयी हम आऊ। तरवर चलत न देखा काऊ॥
आज जो तरवर चल भल नाहीं। आवहु यहवन छांड़ पराहीं॥
वैतो उड़ें और बन ताका। पंडित सुआ भूल मन थाका॥
साखा देखि राज जनु पावा। वैठि निचिंत चला वह आवा॥

पांच बाण कर खोंचा लासा भरे सो पांच।
पांखभरा तन उरझा कित मारे विन बांच॥

बंदभा सुआ करत सुख केली। चूर पांख मेलेसि धर ठेली॥
तहंवां बहुत पंखि खरभरें। आप आपमहं रोदन करें॥
विष दाना कित होय अंगूरे। जहं भा मरन डहन धरचूरे॥
जो न होत चाराकी आसा। कित चिड़हार ढकत लै लासा॥
ये विख-चारा सब विधि ठगी। औ भा काल हाथ लै लगी॥

यहिं झूठी माया मन भूला। चूरी पांख जैसी तन फूला॥
यहि मन कठिन मरे नहिं मारा। काल न देख देखि पै चारा।

हम तो बुद्धि गंवाई बिख चारा अस खाय।
तू सुअटा पंडित हता तू कित भा निठुराय॥

सुवें कहा हमहूं अस भूले। टूटिहिं डोल गर्व जेहि झूले॥
केलाके बन लीन्ह बसेरा। पड़ा साथ तन वैरी केरा॥
सुख कुरवार फरेरी खाना। विख भा जोही व्याध तुलाना॥
काहेक भोग वृक्ष अस फरा। अड़ा लाय पंखहिं कहं हरा।
सखौ निचिंत जोख धन करना। यह निचिंत आगी है मरना॥
भूले हमहूं गर्व तेहिमाहां। श्रो बिगरा पावा जहं पाहां॥
होय निचिंत वैठि तेहि अड़ा। तब जाना खोंचा हिय गड़ा।

चरत न खुरक कीन जब तब रे चरा सुख सोय।
अब जो फांद परागें तब रोयें का होय॥

सुनिके उतर आंसु पुनि पोछे। कौन पंख बांधौ बुध ओछे॥
पंखिन जो बुधि होय उजियारी। पढ़ा सुआ कित धरे मंजारी॥
कित तीतर बन जीभ उघेला। सुक्ति हंकार फांद गयें मेला॥
ता दिन व्याध भयो जिवलेवा। उठी पांख भा नाउं परेवा॥
भई व्याध तृष्णा सुख खाधू। सूझै भुगति न सूझै व्याधू॥
हमहिं लोभ वह मेला चारा। हमहिं गर्व्व वह चाहै मारा॥
हम निचिंत वह आव छिपाना। कौन व्याध है दोष अयाना॥

सो अवगुण कित कीजिये जिव दीजे जेहि काज।
अब कहना कुछ नाहीं मष्ट भली पखिराज॥

चित्रसेन चितौरगढ़ राजा। कइ गढ़ कोटि चित्र सम साजा॥
तेहि कुल रतनसेन उजियारा। धनि जननी जनमी अस बारा॥
पंडित गुन सामुद्रिक देखहिं। देखिरूप औ लगन विशेषहिं॥
रतनसेन यहि कुल निरमरा। रतनजोति मन माथे परा॥
पदक पदारथ लिखी सो जोरी। चांद सूरज जस होय अजोरी॥
जस मालतीकहं भंवर वियोगी। तस वहलाग होय यह जोगी॥
सिंहलदीप जाय वह पावा। सिद्धहोय चितौर लै आवा॥

भोग भोज जसमानी विक्रम साका कीन्ह।
परखरतन जो पारखी सबै लिखन लिख दीन्ह॥

चितौरगढ़कर एक बंजारा। सिंहलदीप चला व्योपारा॥
ब्राह्मन हुत एक निपट भिखारी। सो पुनिचला चलत व्योपारी॥
ऋन काहुकर लीन्हेसि काढ़े। मग तेहि गये होय कछु बाढ़े॥
मारग कठिन बहुत दुख भयी। नांघ समुद्र दीप वह गयी॥
देखि हाट कुछ सूझै न ओरा। सबै बहुत कुछ देखि न थोरा॥
पै सुठ ऊंच नीच तेहिकेरा। धनी पाव निधनी मुख हेरा॥
लाज करोरहि बस्तु बिकाई। सहसनकेर न कोउ ओनाई॥

सबहिं लीन्ह बिसहना औ घर कीन्ह बहोर।
ब्राह्मन तहां लेइ का गांठ सांठ सुठ थोर॥

झुरी ठाढ़ हौं काहेक आवा। बनज न मिला रहा पछतावा॥
लाभ जानि आयौं यह हाटा। मूर गंवाय चलौं यह बाटा॥
का मैं मरन सिखावन सीखी। आयौं मरै मौच हत लिखी॥
आपन चलत सो कीन्हा आनी। लाभ न देखि मूर भइ हानी॥

का ? बोआ जनम औ भूंजी। खोय चल्यों घरहुंकी पूंजी ॥
जेहि व्योहरियाकर व्योहारू। काले देव जो छेकहि वा ॥
घर कैसे पैठव मैं छूंछे। कौन उतर देहौं तेहि पंछे ॥

साथ चला सत विचला भयी बिच समुद पहार।
आस निरासा हौं फिरौं तू विधि देहि उधार ॥

तबहीं व्याध सुआ ले आवा। कंचन बरन अनूप सुहावा ॥
बेंचे लाग हाट ले ओही। मोल रतनमानिक जेहि होई ॥
सुअहिं को पंछ पतंग मंडारें। चलन देख आछे मन मार ॥
ब्राह्मन आय सुआ सों पूंछा। वह गुनवंत कि निरगुन छूंछा ॥
कहु पंखी जो गुन तोहि पाहां। गुन न छिपायी हिरदैमाहां ॥
हम तुम जात ब्राह्मन दोऊ। जात जात पंछ सब कोऊ ॥
पंडित हौ तो सुनावहु वेदू। बिन पंछे पाई नहिं भेदू ॥

हौं ब्राह्मन औ पंडित कहि आपन गुन सोय।
पढ़ेके आगी जो पढ़े दून लाभ तेहि होय ॥

तब गुन मोहि अहा हो देवा। जब पिंजर हुत छूट परेवा ॥
अवगुन कौन जो बंद यजमाना। घाल मंजूसा बेंच आना ॥
पंडित होय सो हाट नहिं चढ़ा। चहौं बिकाय भूल गा पढ़ा ॥
दुइ मारग देखौं यह हाटा। दई चलावै वेहि केहि बाटा ॥
रोवत रकत भयो मुख राता। तन भा पियर कहौं का बाता ॥
राती स्याम कंगठ दुइ ग्रीवां। तेहि दुइ फन्द डरों सठजीवां ॥
पवहूं कगठ फन्दके चीन्हा। दुहूंके फन्द चाहै का कीन्हा ॥

पढ़िगुन देखा बहुत में है आगी डर सोय।
अंध जगत सब जानकी भूल रहा बुधि खोय॥
सुनि ब्राह्मन बिनवा चिरहारू। करि पंखहिकहं मया न मारू॥
कत ये निठुर जिव बधेसि परावा। हत्याकेर न तोहिं डेरावा॥
कहेसि पंख का दोष जनावा। निठुर सई सो परमस खावा॥
उनहिं रोय जानिके रोना। तहूं न तजहिं भोग सुख सोना॥
औ जानहिं तन होय यह नासू। पोषे मांस पराये मांसू॥
जो न होहिं अस परमंस खाधू। कित पंखिनकहं धरे बियाधू॥
जोरि व्याध पंखनि नित धरे। सो निचिंत मन लोभ न करे॥
ब्राह्मन सुआ बेसाहा सुनि मत वेद गरंथ।
मिला आय सो साथिनकहं भा चितौरकी पंथ॥
तबलग चित्रसेन सिव साजा। रतनसेन चितौर भा राजा॥
आय बात तेहि आगी चली। राज बनिज आये सिंहली॥
हैं गजमोतिभरी सब सीपी। और बस्तु बहु सिंहलदीपी॥
ब्राह्मन एक सुआ ले आवा। कंचन-बरन अनूप सुहावा॥
राती स्याम कण्ठ दुइ कांठा। राती डह न लिखा सब पाठा॥
औ दुइ नयन सुहावन राता। राती ठोर अमीरस बाता॥
मस्तक टीका कांध जनेऊ। कबी व्यास पंडित सहदेऊ॥
बोल अर्थसों बोली सुनत सीस सब डोल।
राजमंदिरमहं चाही अस वह सुआ अमोल॥
भयो रजायसु जन दौड़ाये। ब्राह्मन सुआ वेगि ले आये॥
विप्र असीस बिनत औ धारा। सुआ जीवनहिं करौं निरारा॥

पै यह पेट महाबिसवासी। जस बनावा तपी संन्यासी॥
डारै सेज जहां कुछ नाहीं। भुइंपर रही लायगें बाहीं॥
अंधहि रही जो देख न नयना। गूंग रही मुख और न बयना॥
बहिर रही जो श्रौन नहिं सुना। पै यह पेट न रहै निरगुना॥
कइ कइ फेरा नित यह दोषै। बारहिं बार फिरै संतोषै॥

सो मोहिं लिये मंगावै लावै भूंख पियास।
जो न होत अस न बैरी केहि काहुको आस॥

सुअैं असीस दीन्ह बड़ साजू। बड़ परताप अखंडित राजू॥
भागवंत बिधि बुधि-अवतारा। जहां भाग तहं रूप जो हारा॥
कोइ केहि पास आसकै गवना। जो निरास दृढ़ आस न भवना॥
कोइ बिन पूंछै बोल जो बोला। होय बोल माटी के मोला॥
पढ़ि गुनि जितने पंडित मति भेऊ। पूंछै बात कहै सहदेऊ॥
गुनी न कोई आपसराहा। जो सो बिकाय सान मों चाहा॥
जब लग गुन परगट नहिं होय। तब लग मर्म न जानै कोय॥

चतुर वेद हौं पंडित हीरामन मोहिं नाउं।
पदमावतिसों मेरहौं सेवकरौं तेहि ठाउं॥

रतनसेन हीरामन चीन्हा। एक लाख ब्राह्मणकहं दीन्हा॥
बिप्र असीस जो कीन्ह पयाना। सुआ जो राजमंदिर महं आना॥
बरनउं काहि सुआ की भाखा। दीन्ह सुनाउं हिरामन राखा॥
जो बोल राजा मुखजोवा। जानौं मोतिन हार पिरोवा॥
जो बोलै सब मानिक मूंगा। नाहित मवन बांध है गंगा॥

जनु हि मारसुख अमिरन्त मेला। गुरु है आप कीन्ह जग चेला॥
सुरज चांदकी गाथा कहा। प्रेमकी कहन लाय चित गहा॥
जो जो सुनै धुनै सिर राजा प्रीति होय अगाह।
अस गुनवंत नाहिं भल सुअठा वावर कीजे काह॥
दिन दस पांच तहां जो भयी। राजा कतहुं अहेरे गयी॥
नागवती रूपवंती रानी। सब रनवास पाट परधानी॥
किय सिंगार कर दरपन लीन्हा। दरपन देखि गर्व जेहि कीन्हा॥
बोलहु सुआ पियारे नाहा। मोरे रूप कोउ जगमाहा॥
हंसत सुआ पुनि आय सुनारी। दीन्ह कसौटी औ पनवारी॥
सुआ वानि तोरी कस सोना। सिंहलदीप तोर कस लोना॥
कौन दीठि तोरे रुपमनी। वहिं हौंलोन कि वै पदमिनी॥
जो न कहेसि सत सुअठा तोहि राजाकी आन।
है कोई यह जग महंमोरे रूप समान॥
सुमिरिरूप पदमावतिकेरा। हंसा सुआ रानी सुख हेरा॥
जेहि सरवरमहं हंस न आवा। बगुला तहं जलहंस कहावा॥
दई कीन्ह अस जगत अनूपा। एक एकते आगर रूपा॥
कै मन गर्व न छाजा काहू। चांद घटा औ लाग्यो राहू॥
लोन विलोन तहां को कहै। लोनी सोइ कंथ जेहि चहै॥
काहि पूंछ सिंहलकी नारी। दिनहिं न पूजे निसि अंधियारी॥
कनक-सुगंध सुतेहिंकी काया। जहां माथ का बरनउं पाया॥
गढ़ी सुसोने सोंधी भरे सो रूपे भाग।
सुनत रोष भइ रानी हिये लोन असलाग॥

जो यह सुआ मंदिरमहं अहै। कोन होय राजासों कहै॥
सुनि राजा पुनि होय वियोगी। छांड़े राज चले होय जोगी।
बिष राखि नहिं होत अंगूरू। सबद न देइ बहुरि हम चूरू॥
धाय दामिनी बेगि हंकारी। वह सौंपा हिय रिस न संभारी।
देखौ यह सुअटा मुंडचाला। भयो न ताकर जाकर पाला॥
मुखको आनि पेटवस आना। तेहि अवगुन दस हाट विकाना।
पंखिन राखौ होय कुभाखो। लेत हमारि जहां नहिं साखौ।

जेहि दिनका में डरतहौं रयनि छिपानो सूर।
सो लेदै कमलकहं मोकहं होय मयूर॥

धाय सुआ ले मारै गई। समुझि ग्यान हिरदै मति भई॥
सुआ सुराजा करि बिसरामौ। मार न जाय चहै जेहि स्वामी॥
यह पंडित खंडित वैरागू। दोष ताहि जेहि सूझि न आगू॥
जो तिरियाके काज न जाना। परि धोखि पाछै पछताना॥
नागमती नागिन-बुध ताऊ। सुआ मयूर होय नहिं काऊ॥
जो नहिं कंथकी आयसु माहां। कौन भरोस नारिकी बाहां॥
मग यहि खोज होय तस आय। तुरी रोगहरि माथे जाय॥

दुइ सो छिपायी ना छिपे इक हत्या अरु पाप।
अन्तहि करहिं विनास यह में साखौ दै आप॥

राखा सुआ धाय मति साजा। भयो खोज तस आयो राजा॥
रानी उतर मानसों दीन्हा। पंडित सुआ मंजारी लीन्हा॥
मैं पूछवी सिंहल पदमिनी। उतर दीन्ह तुमहको ना गिनी॥
का तोर पुरुष रयनि कर राऊ। उलुन जानि दिवस कर भाऊ॥

वै जस दिन तू निसि अंधियारी। जहां वसन्त करीलकौ वारी॥
का वह पंखि कूट मुहंकूटी। अस बड़ बोल जीभ मुख छोटी॥
जहर चुवै जो जो कहि वाता। अस हत्यार लिये मुख राता॥

माथे नहिं वैसारी जो सठ सुआ संलोन।
कान टूटि जेहि आभरन काले करव सुसोन॥

राजा सुनि वियोग तस माना। जैसे हिय विक्रम पछिताना॥
वह हीरामन पंडित सुआ। जो बोलै मुख अमिरन्त चुआ॥
पंडित दुख खंडित निरदोखा। पंडित हिये परै नहिं धोखा॥
पंडितकेर जीभ मुख सोधे। पंडित वात न कहैं बियोधे॥
पंडित सुमति देपन्थहि लावा। जो कुपंथ तेहि पंडित न भावा॥
पंडित राती वदन सरेखा। जो हत्यार रुहिर पै देखा॥
कि प्रान घट आन हि मती। कौ जलि होहिं सुआ संग सती॥

जन जानहु किये अवगुन मंदिर होय सुख राज।
आयसु मेट कन्तकी काकर भय न अकाज॥

चांद जैस धन उजेर अहै। भा पिउ-रोष गहन अस गहै॥
परम सुहाग निवाहु न पारी। भा दुहाग सेवा जब हारी॥
इतनक दोष विरज पिउरूठा। जो पिउ आपन कहै सुझूठा॥
अइस गर्ब नहिं भूले कोई। जेहिं डर बहुत पियारो सोई॥
रानी आय धायके पासा। सुआ भवा सेमर की आसा॥
परा प्रीति-कंचन महं सोसा। विहर न मिल स्याम पै दीसा॥
कहां सुनार पास जेहि जाऊं। देइ सुहाग करै इक ठाऊं॥

मैं पिय प्रीति भरोसे गर्ब कीन्ह जिवमाहं।
तेहि रिस हौं पर हेली नगर रोष किय नाहं॥
उतर धाय तब दीन्ह रिसाई। रिस आपहिं बुधि अवरहिं खाई॥
मैं जो कहा रिस करहु न बाला। कौनगयो यहि रिस करि घाला॥
विरस विरोध रसहि पै होई। रिस मारे तेहि मार न कोइ॥
तुइ रिस भरी न देखिसि आगू। रिसमहं काकहं भयो सुहागू॥
जेहि रिस तेहि रस जोग न जाई। वेरस हरदि होय पीराई॥
जेहिं के रिस मिलाय रस दीजे। सो रस तज रिस कोह न कीजे॥
कंत सुहाग की पाई साधा। पावै सो जो वहौ चित बांधा॥

रहै जो पियकी आयसु औ वरती होय हीन।
निरमल देखे चांद जस जनम न होय मलीन॥
जुवा हार मन समुझो रानी। सुआ दीन्ह राजा कह आनी॥
नागमती हौं गर्ब न कीन्हा। कंथ तुम्हार मर्म्म पिय लीन्हा॥
सेवा करै जो बारहमासा। अतन कि अवगुन करै नियासा॥
जो तुम देइ नायकी ग्रीवा। छांड़हि नहिं विन मारे जीवा॥
मिलतहि महं जन अहो निरारे। तुम सो अहो अईस पियारे॥
म जाना तुम मोहे माहां। देखौं ताकि तो हौ सब माहां॥
का रानी का चेरी कोई। जेहि कहं मया करै भल सोई॥

तुम सो कोई न जीता हारा बिक्रम भोज।
पहिले आपहिं खोयकर करै तुम्हारा खोज॥
राजैं कहा सत्य कहु सुआ। विनसत कस जस सेमर-भुआ॥
होइ मुखराती कहो सत बाता। जहां सत्य तहं धरम संघाता॥

बांधी सृष्टि अहै सत केरी। लक्ष्मी अहै सत्य की चेरी॥
सत्य जहां साहस सिधि पावा। औ सतवादी पुरुष कहावा॥
सत कहि सती संवारे सरा। आग लाय चहुं दिसि सत जरा॥
दुइ जग तरा सत्य जें राखा। और पियार दीन्ह सत भाखा॥
सो सत छांड़ि जो धरम बिनासा। का मति कीन्ह हिये सतनासा॥

तुम सयान औ पण्डित असत न भाखौं काउ।
सत्य कहौ मोसों वह काकर है अपनाउ॥

सत्य कहत राजा जिव जाऊ। पै मुख असत न भाखों काऊ॥
हौं लिय सत्य निसार्यों यहिंते। सिंहलद्वीप राज घर जेहिंते॥
पद्मावति राजा को बारी। पद्मगन्ध ससि दई संवारी॥
ससि मुख अंग मलयगिरि रानी। कनक सुगन्धहि द्वादस बानी॥
है पद्मीन जो सिंहलमाहां। सुगंध स्वरूप सो वहिकी छाहां॥
हीरामन हौं तिहके परेवा। कांठा फूटि करत तेहि सेवा॥
औ पायों मानुख की भाखा। नाहीं तो पंखि मूठिभर पांखा॥

जबलहिं जियों रात दिन सुमिरों मरों वही लै नाउं॥
मुख राता तन हरिहर कीन्हा दुहुं जगत लेजाउं॥

हीरामन जो कमल बखाना। सुनि राजा होय भवंर भुलाना॥
आगी आव पंखि उजियारे। कहै सुदीप पतंग किय मारे॥
रहा जो कनक सुवासके ठाउं। कस न होय हीरामन वाउं॥
को राजा कस दीप अतंगू। जेहि रे सुनत मन भयो पतंगू॥
सुनि सुसमुद चख भयी कलकला। कमला वाहि भवंर होय मिला
कहो सुगंध धनि कस निरमली। भा अलि संग कि अबहीं कली॥
औ कहु तहां जो पद्मिनि लोनी। घर घर सबके होहिं जस होनी॥

सबै बखान तहांकर कहत सो मोसों आव।
जहौं दीप वह दिखा सुनत उठा तस चाव॥
का राजा हौं बरनों तासू। सिंहलदीप अहै कैलासू॥
जो गा तहां भुलाना सोय। गयी युग बीत न बहुरा कोय॥
घर घर पद्मिन छत्तिस जाती। सदा बसन्त दिवस अरु राती॥
जेहिं जेहिं बरन फूल फुलवारी। तेहिं तेहिं बरन सुगन्ध सुनारी
गन्धर्बसैन तहां बड़ राजा। अछरहिंमाहिं इंद्रासन साजा॥
सो पद्मावत ताकी बारी। औ सब दीपमाहिं उजियारी॥
चहूं खण्ड के बर जो आहीं। गर्बहिं राजा बोलहिं नाहीं॥
उदित सूर जस देखी चांद छिपै जेहि धूप।
ऐसे सबै जाहिं छिप पद्मावतको रूप॥
सुनि रबि-नाउं रतन भा राता। पण्डित कहौ फेर कछु बाता॥
तुइ सुरङ्ग मूरत वह कही। चितमहं लाग चित्र है रही॥
जनु होय सुरज आय मन बसे। सब घटपूर हिये परगसे॥
अबहूं सूर्ज चांद वह छाया। जल बिन मीन रक्त बिन काया॥
करन करान भा प्रेम अंगूरू। जो ससि स्वर्ग चढ़ौ होय सूरू॥
सहस-किरान रूपमन भूला। जहं जहं दृष्टि कमल जनु फूला॥
तहां भंवर जहं कमला गन्धौ। भए ससि राहुकेर रिनबन्धौ॥
तीन लोक खंड चौदह सबै परे मोहिं सूझ।
प्रेम छोड़ि कुछ और नहिं लुना जो देखौं मन बूझ॥
प्रेम सुनत मन भूल न राजा। कठिन प्रेम सिर दिय तेहि छाजा॥
प्रेम-फन्द जो पड़ा न छूटा। जीव दीन्ह पै फांद न छूटा॥

गिरगिट छन्द धर दुख तेता। खन छोड़ पीत राति खन सेता॥
जानि पुछार जो भय बनबासी। रोवं परी फांदन को आसी॥
पांखि फरेरा सोई फांदू। उड़ न सकहिं उरझे भयि बांदू॥
मेउं मेउं निसि दिन चिल्लाय। बह्यो रोष नागिन धर खाय॥
पांडुक सुआ कण्ठ वह चोन्हा। ज्यहिं गें परा चाहि जिव दीन्हा
तीतर गये जो फांद है नितहि पुकारे दोष।
सुक्ति हंकार फांद गें मेले कित मारे पुम मोष॥
राजा लीन्ह जबके ख्वासा। अइस बोल नहिं बोल निरासा॥
पहिल प्रेम है कठिन दुहेला। दोउ जग तरा प्रेम जेहि खेला॥
दुख भीतरहिं प्रेम मधु राखा। किंचन मरन चहै सो चाखा॥
जेहिं नहिं सीस प्रेमपथ लावा। सो पृथ्वीमहं काहेक आवा॥
अब मैं पीय प्रेमपथ मेला। पायन ठेल राख की चेला॥
प्रेम-वार सो कहै जो देखा। जें न देखि का जानि विशेखा॥
तबलग दुख पीतम नहिं भेटा। मिला तो गा जरमक दुख मेटा॥
जस अनूपतुइ बरनो नखसिख बरन सिंगार।
है मोहिं आस मिलनको जो पुरवै करतार॥

शृङ्गारखण्ड।

का सिंगार वह बरनउं राजा। वहक सिंगार वहीपै छाजा॥
प्रथम सीस कस्तूरी केसा। बलि वासुकि को और नरेसा॥
भंवर केश वह मालति रानी। विषहर लरहिं लेहिं अरघानी॥

बेनी छोरि झारजो बारा। स्वग पतार होय अंधियारा॥
कोमल कुटिल केस नगकारे। लहरै भरे भुअंग विखारे॥
बेधो जानि मलयगिरि वासा। सीस चढ़े लोटहिं चहुं पासा॥
घुंघुरवार अलकें विषभरे। संकर प्रेम ज्यों गरे परे॥

अस फंदवार केस वै राजा परासीस गें फांद।
आठों कुली नाग सब उरके भये केसके बांद॥

बरनउं मांग सीस उपराहीं। सेंदुर अबै चढ़ा जेहि नाहीं॥
बिन सेंदुर अस जानहिं दिया। उजेर पंथ रयनिमहं किया॥
कंचन-रेख कसौटी कसी। जनु घन महं दामिनि परगसी॥
सुर्ज-किरन जनु गगन विसखी। यमुनामांझ सरसती देखी॥
खांड़े-धार रुधिर जनु भरा। करवट लै बेनीपर धरा॥
तेहिपर पूर धरे जो मोती। जमुनमांझ गङ्गाकी सोती॥
करवट तपा लीन्ह होय चूरू। मग सुरुधिर लै देइ सिंदूरू॥

कनक दुआदस बानि होयं चही सुहाग वहभाग।
सेवा करहिं नखत ससि तरई उवैं गगन तस मांग॥

कहौं लिलाट दुइजकीजोती। दुइजहि ज्योति कहां जग ओती॥
सहस-किरन जो सूर्ज दिपाये। देखि लिलाट सोउ छिप जाये॥
का सिर बरणौं दिपै मयंकू। चांद कलङ्की वह निकलंकू॥
आव चांद पुनि राहु गरासा। वह बिन राहु सदा परकासा॥
तेहि लिलाटपर तिलक बईठा। दुइज पास जानहुं ध्रुव दीठा॥
कनक-पाट जनु बेठो राजा। सवै सिंगार अस्त्र लै साजा॥
वह आगी थिर रहै न कोऊ। वहका कहिं अस जुरा संजोऊ॥

खड्ग धनुष औ चक्र बान दुइ जगमारन नाउं ।
सुनिके परा मुरछकै राजा मोकहं भयी यकठाउं ॥

भौहें श्याम धनुष जनु ताना। जासों हेरि मारि विष-बाना॥
ओहि धनुष वह भौहें चढ़ा। कें हत्यार काल अस गढ़ा॥
ओही धनुष कृष्णापै अहा। ओहि धनुष राघौ कर गहा॥
ओहि धनुष रावन संहारा। ओही धनुष कंशासुर मारा॥
ओहि धनुष बेधा हत राहू। मारा वही सहस्रावाहू॥
ओहि धनुष में उप नहि चीन्हा। धानिक आप पनच जग कीन्हा
वहि भौंहहि सर कोइ न जीता। अछरहिं छिपी छिपी गोपीता॥

भौंहं धनुष धनि धानक दूसर सर न कराय।
गगन धनुष उगवै लाजहि सो छिप जाय॥

नयन-वान सरि पहुंच न कीज। जनु समुद्र अस उलटहिं दोज॥
राती कमल करहिं अल भवां। गुंजहिं मात न करहिं अपसवां॥
उठहिं तुरंग लेहिं नहिं वागा।. जानौं उलट गगनकहं लागा॥
पवन झकोरें देहिं हिलोरा। स्वर्ग लाय भुइं लाय वहोरा॥
जग डोलै डोलत नयनाहां। उलथ औडार चहै पलमाहां॥
जवहिं फिरायि कङ्गन बूरा। असवै भौंह भंवरकी जूरा॥
समुद हिलोर करहिं जनु भूले खंजन लरहिं मिरग बन भूले॥

भरे समुद अस नयन दुइ मानिक भरे तरङ्ग।
आवहिं तीर जाहिं फिर काल-भंवर तेहि सङ्ग॥

वरुनी का वरनें इमि बनी। साधे वान जानु वहिं अनी॥
जुरी राम रावनकी सेना। बीच समुद्र भयें वह नैना॥

पारहिं बार नयावर साधे। जासों हेर लाग विष बाधे ॥
उन्ह बानहिं अस कौन न मारा। वेधरहा सगरा संसारा ॥
गगन-नखत जस जाहिं न गिने। वै सब बान वही के हने ॥
धरती बान वेध सब राखि। साखा ठाढ़ वही सब साखि ॥
रोंव रोंव मानुख तन ठाढ़े। सूतहिं सूत वेध अस गाढ़े ॥

वरुनि-बान जस उपनहिं वेधी रन बन ढंख।
सो जेहि तन सब रोवां पंखहि तन सब पंख ॥

नासिक खर्ग देउं केहि जोगू। खर्ग खीन वह वदन संयोगू ॥
नासिक देखि लजान्यो सुआ। सूक आय वेसर होय उआ ॥
सुआ जो पिय रही राम न लाजा। और भावका वरनउं राजा ॥
सुआ सुनाक कठोर न वारी। वह कोमल तिलपुहुप संवारी ॥
पुहुप सुगंध करहि सब आसा; मग हरकाय लेइ हम पासा ॥
अधर-दसनपर नासिक सोभा। दाड़िम देखि सुआ मन लोभा ॥
खंजन वेहि दिस केलि कराहीं। वेहिं वह रसको पाव कोउ नाहीं

देखि अमीरस अधरन्ह भयो नासिका कीर।
पवन वास पहुंचावे आस्रम छाड़ न तीर ॥

अधर सुरंग अमीरस-भरे। बिंब सुरंग लाज बन फरे ॥
फूल दुपहरी जानहु राता। फूल झरहिं जो जो कहि बाता ॥
हीरा लीन्ह सुविद्रुम धारा। विहंसत जगत होय उजियारा ॥
भइ मजीठ बातहिं रंग लागें। कुसुम रंग थिर रहै न आगें ॥
वहि के अधर अमी भर राखि। अवहिं अछूति न काहुं चाखि ॥

मुख तंबोल धार नहिं रसा। केहि मुख-जोग सो अमिरतु बसा॥
राता जगत देख रंगराती। रुधिर भरी आछहिं विहंसाती॥
अमी अधर अस राजा सब जग आस करेइ।
केहि का कमल विकासा को मधुकर रस लेइ॥
दसन चोक बैठे जनु हीरा। औ बिच बिच रंग स्याम गंभीरा॥
जनु भादौं निसि दामिनि दीसी। चमक उठे तस तहौं बतीसी॥
वह सु जोति हीरा उपराहीं। हीरा वेहि सो तेहि परछाहीं॥
जेहि दिन दसन ज्योति निरमई। बहुतें ज्योति ज्योतिदा भई॥
रवि ससि नखत दीन्ह वह ज्योती। रतन पदारथ मानिक मोती
जेहिं तेहिं विहंसि सभामहं हंसी। तहंतहं छिटक ज्योतिपरगसी
दामिनि चमक न सरवरि पूजा। पुनि वह ज्योति होय को दूजा॥
विहंसत हंसत दसन तस चमकी पाहन उठे छरक्कि।
दाड़िम सर जो न की सका फाट्यो हिया दरक्कि॥
रसना कहौं जो कहि रसबाता अमिर तु वचन सुनत मन राता॥
हरी सिसिर चातक कोकिला। बौन वंसिवे वैन जेहि मिला॥
चातक कोकिल रमहिं जो नाहीं। सुनि वै वयन लाज छिप जाहीं
भरे प्रेम मधु बोलहिं बोला। सुनै सो माथ घूमके डोला॥
चतुर वेदमति सब वह पाहां। ऋग यजु साम अथर्वन माहां॥
इक इक बोल अर्थ जो सुना। इन्द्र मोहि ब्रह्मा सिरधुना॥
भागवत भर्थ पिंगल औ गीता। अर्थ जो जेहि पंडित नहिं जीता
भावसती औ व्याकरन सुनी पिंगल पाठपुरान।
वेद भेदसों बात कहि जनु लागें हिये वान॥

पुनि बरनउं का सुरंग कपोला। इक नारंगकी दो किये भोला॥
पुहुप पंग रस अमिरतु सांधे। की अस सुरंग खरोरा बांधे॥
तेहि कपोल बायें तिलपरा। जो तिल देखि सो तिल तिल जरा॥
जनु घुंघुची वह तिल करमुहां। बिरह-बान सांधो सामहां॥
अगिन-बान तिल जानहुं सूझा। इके कटाच्छ लाख दुइ जूझा॥
सो तिल काल मेट नहिं गयो। अब वह काल काल जग भयो॥
देखत नयन परी परछाहीं। तेहिते रात श्याम उपराहीं॥

सो तिल देखि कपोल-पर गगन रहा धुव गाड़।
खनहिं उठे खन बूड़ डोले नहिं तिल छाड़॥

श्रवन सीप दुइ दीप संवारे। कुण्डल कनक रचे उजियारे॥
मनिकुण्डल चमकहिं अति लोने। जनु कौंधा लवकहिं दुइ कोने॥
दोउ दिस चांदसुरज चमकाहीं नखतहं भरी निरखि नहिं जाहीं॥
तेहिपर घूंट दीप दुइ वारे। दुइ धुव दुहुं खूंट वै सारे॥
पहिरे घूंटी सिंहलदीपी। जानहु भरे कहजही सीपी॥
खनखन जोहि चीर शिरगहा। कांपत बीजु धोल दिसि रहा॥
डरहिं देवलोके सिंहला। परै न बीजु टूटि तेहि कला॥

करहिं नखत सब सेवा श्रवन दीन्ह अस दोउ।
चांद सूरज अस कहें ओर जगत का कोउ॥

बरनउं ग्रीव कोंव कोरीसा। कंचन-तार जनु लाग्यो सीसा॥
कूड़ें फेर जानु गेंय गाढ़े। हरी पुछार ठगी जनु ठाढ़े॥
जनु हिये काढ़ि परेवा ठाढ़ा। तेहि ते अधिक भाव गयें बाढ़ा॥
चाक चढ़ाय सांच जनु कीन्हा। बाग तुरंग जानु गहि लीन्हा॥

गयी मोर तम-चोर जो हारा। उन्हें पुकारे सांझ सकारा॥
पुनि तेहि ठाउं परी त्रय रेखा। घूंट जो पीक लीक तस देखा॥
धन वह ग्रीव दीन्ह विधि भाउ। वहिंका कहिं लै करे मिराउ॥

कण्ठ औ मुक्तावनमाला सोहै आभरन ग्रीव।
को होय हार कण्ठ लागी की तप साधा जीव॥

कनक-दण्ड दुइ भुजा कलाई। जानहु फेर कंडेरे भाई॥
कदलि-गाभकी जानो जोरी। औ राती वह कमल हथोरी॥
जानो रकत हथौरी बूड़ो। रवि परभात तात वै जूड़ी॥
हिया काढ़ि जनु लीन्हेसि हाथा। रुधिर-भरी अंगुरी तिहिसाथा
औ पहिरें नगजड़ी अंगूठी। जग बिन जीव जीव वहि मूठी॥
बाहु कङ्गन ताड़ सलोने। डोलत बाहु भावगत लोने॥
जानो गति बेरिनि दिखराय। बाहुं डुलाय जीव लै जाय॥

भुज उपमा पौ नारि न पूजी खीन भई तेहि चिन्त।
ठावहिं ठावं वेध भइ हिरद जवा सांस लै मिन्त॥

हिया थार कुच कंचन-लाडू। कनक कचूर उठे की चाहू॥
बेधे भंवर कंट केतुकी। चाहैं बेध कीन्ह कंचुकी॥
कुन्दन वेल साज जनु गूंदे। अमिर तु भरे रतन दुइ मूंदे॥
जोवन वान लेहिं नहिं वागा। चाहहिं हुलस हिये में लागा॥
अगिन-वान दुइ जानों सांधे। जग बेधे जो होहिं न बांधे॥
उतंग-जंभीर होय रखवारी। छुइ को सकै राजाकी बारी॥
दाड़िम दाख फरी अब चाखा। अस नारंग वेहिं काकहि राखा॥

राजा बहुत मुये तप लाय लाय भुइँ माथ।
काहु छूव न पारी गये मरोरत हाथ॥
पेट पतरि जनु चंदन लावा। कहकह केसर वरन सुहावा॥
थोर अहार न कर सुकमारा। पान फूल ले रहै अधारा॥
स्याम भुअंगनि रोमावली। नाभी निकसि कमल कहं चली॥
आय दुहों नारंग बिच भयी। देखि मयूर ठमक रहि गयी॥
आय जुरी भंवरन की पांती। चंदन गाभ वास की माती॥
गइ कालिन्दी बिरह सताई। चल पराग अरवल बिच आई॥
नाभी कुण्ड सो वारानसी। सौंह को होय मीच तेहि लसी॥
सिर करवट तन कासी ले ले बहुत सीझ तेहि आस।
बहुत धूम घूंट में देखी उतर न देइ निरास॥
चोंटी पीठ लीन्ह वै पाछें। जनु फिर चली अच्छरा काछें॥
मलयागिरिको पीठि संवारे। वेनी नाग चढ़ा जनु कारे॥
लहरें देत पीठ जनु चढ़ा। चीर उढ़ावा केंचुल मढ़ा॥
वेहिंका कहँ अस वेनी कीन्हीं। चंदनवास भुअंगहि लीन्हीं॥
कृष्णाकरेत चढ़ा वह माथे। तव सो छूटि अब छूट न नाथे॥
कारे कमल गहे मुख देखा। ससि पीछे जनु राहु विसेखा॥
को देखे पावै वह नागू। सो देखे माथे मन भागू॥
पन्नग जो पंकज मुख गहे खंजन तेहि सिर बइठ।
छात सिंहासन राजधन ताकहँ होइ जो दीठ॥
लंक खीन अस आहि न काहू। केहरि कहूं न वह सर ताहू॥
वसा लंक पखनी जग भीनी। तेहि ते अधिक लंक वह खीनी॥

परहंस पिवर भयि तहं बसा। लियि डंख मानुखकहं डसा॥
मानहुं नलिन-खंड दुइ भयि। दुहुं बिचलंक तार रहि गयि॥
छियि सो मूड़पर चली वह नागा। पैग देत कित सहसक लागा
छुद्रघण्ट मोहहिं नर राजा। इन्द्र अखाड़ आय जनु बाजा॥
नाभी बीन गहे कामिनी। लाकहिं सवै राग रागिनी॥

सिंह न जीता लंक-सरि हार लीन्ह बनवास।
तेहि रिस रकत पियि मनुख खाय मारकी मांस॥

नाभीकुण्ड सो मलय समीरू। समुद-भंवर जस भवै गंभीरू॥
बहुते भंवर बवडर भयि। पहुंच न सके सरगकहं गयि॥
चंदनमांझ कुरंगिन खोज। वेहिंको पावको राजा भोजू॥
को वह लागहि बंचल सौंभा। काकहिं लिखी अइसकी रोभा॥
सोहै कमल सुगंध सरीरू। समुद लहर सोहै तन चीरू॥
भूलहि रतन-पाटके झोंपा। साज मदन वहि काकहं कोपा॥
अवहिं सो अहै कमलकी करी। न जनौं कौन भंवर कहं धरी॥

वेध रही जग वासना निरमल मेद सुगंध।
तेहि अरथान भंवर सब लुब्धे तजहिं न दियि बंध॥

बरनउं तंब लंक की शोभा। औ गज-गवन देख सब लोभा॥
जुरे जंघ सोभा अति पायि। केला खंभ फेर जनु लायि॥
कमल-चरन अति रात बिसेखी। रहै पाटपर भूमि न देखी॥
देवता हाथ हाथ पग लेहीं। जहं पग परै सीस तहं देहीं॥
माथे भाग न कोउ अस पावा। चरनकमल ले सीस चढ़ावा॥

चौरा चांद सुरज उजियारा। पायल बीच करहिं झनकारा ॥
अनवट बिछिया नखत तराईं। पहुंच सकै को पांइन ताईं ॥
वरन सिंगार न जान्यो नखशिख जइस अभोग।
तस जग कछू न पायों उपमा देउ वह योग ॥
सुनिकै राज गयो मुरझाई। जानो लहर सुरजकै पाई ॥
प्रेम-घाव दुख जानि न कोई। जेहि लागै जानै पै सोई ॥
परा सुप्रेम समुद्र अपारा। लहरहिं लहर होय बिस भारा ॥
बिरह-भंवर होय भांवर देई। खन खन जीव हिलोरहिं लेई ॥
कितहिं निसांस बूड़ि जिव जाइ। कितहिं उठै निसांस बौराइ ॥
कितहिं पीत खनहो मुख सेता। कितहिं चेत खन होय अचेता ॥
कठिन मरनते प्रेम व्यवस्था। नान जियै नहिं जाय अवस्था ॥
जनु लें हारहिं लीन्ह जिव हरहिं तिरासहि ताहि।
इतना बोल न आव मुख करें तिराहि तिराहि ॥
जहंलग कुटुंब लोग औ नेगी। राजा राय आय सब वेगी ॥
ज्ञानवंत गुनी कारनी आये। ओझा वैद्य सयान बुलाये ॥
चरचहिं चेष्टा परखहिं नारी। नेर नाहिं औषधि तहिं वारी ॥
है राजा लछमनके करा। सती वान मोह है परा ॥
तहं धो राम हनुमंत वल दोरी। कोले आव सजीवन-मूरी ॥
विनय करहिं जेती गढ़पती। का जिव कीन्ह कोन मतमती ॥
कहो सो पियर काहि पुनि खांगा। समुद सुमेरु औ तुमहिं मांगा॥
धांवन तहां पठावें देहिं लाख दस रोक।
हो सो वेल जेहि वारी आनहिं सवै वरोक ॥

जो भा चेत उठा वैरागा। बावर जनो सोय उठि जागा॥
आय जगत बालक जस रोवा। उठा रोय हा ग्यान सो खोवा॥
हौं तो अहा अमरपुर जहां। यहां मरनपुर आयौं कहां॥
के उपकार मरनपर कीन्हा। सुक्ति जगाय जीव हर लीन्हा॥
सोवत रहा जहां सुख-साखा। कस न तहां सोवत बिधि राखा॥
अब जिव वहां यहां तन सूना। कबलग रह यहि प्रान बहूना॥
जो जिव घटे कालके हाथा। कठिन नेक पै जीवन साथा॥

उठहिं हाथ तन सरवर हिया कमल तेहि माहिं।
नयनहिं जानहु नेरे कर पहुंचत अवगाहिं॥

सबहिं कहा मन समझौ राजा। कालसे ते कुछ जूझ न छाजा॥
तासों जूझ जात जो जिता। जातन कृष्ण तजहिं गोपिता॥
उनहिं नेह काहुसे कीजे। नाउं मेटि काहे जिव दीजे॥
पहिलहिं सुख्ख नेह जब जोरा। पुनि होइ कठिन निवाहत ओरा॥
रहत हाथ तन जइस सरोरू। पहुंच न जाय परा तस फेरू॥
गनन दीठि सो जाइ पहुंचा। प्रेम-अदृष्टि गगनते ऊंचा॥
धुवते ऊंच प्रेम ध्रुव ऊआ। शिर दे पाउं दिये सो छुआ॥

तुम राजा औ सुखिया करो राज सुख भोग।
यहरे पंथ सो पहुंचै सहै जो दुःख वियोग॥

सुवैं कहा मन समझो राजा। करत पिरीति कठिन है काजा॥
तुमहिं अबहिं जेई घर पोई। कमल न भेटहिं भेटहिं कोई॥
जानहि भंवर जो तेहि पंथ लूटे। जीव देहि जो दिये न छूटे॥
कठिन आह सिंहल कर राज। पाई नाहिं जो भाकी बाज॥

वह पंथ जाय जो होय उदासी। जोगी जती तपी संन्यासी॥
भोग किये पय्यत वह भोगू। तज सो भोग को इ करत न जोगू॥
तुम राजा चाहो सुख पावा। जोगहि भोग करत नहिं भावा॥

साधन सिद्ध न पाई जौलौ साधि न तप्प।
सो पै जानहिं बापुरी सीस जो कर नहिं कल्प॥

का भाखितू कहानी कथा। निकस घीव न बिन दधि मथा॥
जौलह आप हेराय न कोई। तौल हि हेरत पावन सोइ॥
प्रेम-पहाड़ कठिन विधि गढ़ा। सो पै जाय सीससों चढ़ा॥
पंथ-सूरि नगर उठा अंगूरू। चोर चढ़ा के चढ़ि मंसूरू॥
तुइं राजाका पहिरेसि कंथा। तोरे घरहि मांभा दस पंथा॥
काम क्रोध तृष्णा मन माया। पांचौ चोर न छांड़हिं काया॥
नव सेंधें गढ़के मंभिआरा। घर मूसहिं निसिकी उजियारा॥

अबहूं जागि अयाने होत आव निसि भोर।
पुनि कुछ हाथ न लागै मूस जायं जब चोर॥

सुनि सो बात राजा मन जागा। पलक न मारि टकटका लागा॥
नयनहिं दुरहिं मोति औ मूंगा। जस गुड़ खाय रहा है गूंगा॥
हिय की ज्योति दीप वह सूझा। यह जो दीप अंधेरा बूझा॥
उलटि दीठि माया सो रूठी। पलक न फिरी जानकी झूठी॥
जो पै नाहीं इस्थिर दसा। जग उजारि काकीजे बसा॥
गुरू बिरह चिनगी पै मेला। जो सुलगाय लिये सो चेला॥
अबकि पतङ्ग भृङ्गकी बारा। भंवर होउं जेहि कारन जरा॥

फूल फूल फिर पूंछौं जो पूंछौं वह केत।
तन न्यौछावर कै मिलो ज्यों मधुकर जिउ देत॥
हिन्दू मीत बहुत समझावा। मान न राजा गवन भुलावा॥
उपजै प्रेम पीर जेहि आयी। पर बुधि होत अधिक सो आयी॥
अमिरत बात कहत विष जाना। प्रेमको वचन मीठ कै माना॥
जो वह विषि मारिकै खाय। पूंछौ ताही प्रेम मिठाय॥
पूंछौ वात भरथ रहि जाय। अमिरत राज तजो विष खाय॥
औ महेश बड़ सिद्ध कहावा। उनहूं विषि कण्ठ पै लावा॥
होत उयो रवि किरन निकाशा। हनुमंत होयको देइ सुवासा॥

तुम सब सिद्धि मनावहु होय गनेश सिधि लेहु।
चेला कौन चलावै तुले गुरू जेहि भेहु॥
तजा राज राजा भा जोगी। कर किंकरी तन कियो वियोगी॥
तन विसभर मन बावर लटा। उरझा प्रेम परी सिर जटा॥
चन्द्रवदन औ चन्दन-देहा। भस्म चढ़ाय कीन्ह तन खेहा॥
मेखल सिंहे चक्र ढिंढारे। लीन्ह हाथ तिरसूल संभारे॥
कंथा पहिर दण्ड कर गहा। सिद्धि होय कहं गोरख कहा॥
मुद्रा श्रवन कण्ठ जपमाला। कर उहियां कांधे सिंह छाला॥
पांवर पाय लीन्ह सिर छाता। खप्पर लीन्ह भेष कै राता॥

चला भक्ति मांगनकहं साज किया तप जोग।
सिद्धि होय पदमावत पायी हिरदै वियोग॥
गनिक कहहिं कर गवन न आजू। दिन लै चलहिं होय सिधकाजू॥
प्रेमलुब्ध दिन घरी न देखा। तव देखी जब होय सरेखा॥

जेहि तन प्रेम कहां तेहि मांसू। काया रकत न नयनहि आंसू॥
पंडित भुलान न जानहि चालू। जीव लेत दिन पूंछन कालू॥
सती कि बौरी पूंछें पांड़े। औ घर बैठि नसैंतें भांड़े॥
मरि जो चले गङ्गा गति लेइ। तेहि दिन कहां घड़ीकों देइ॥
में घर वार कहांकर पावा। घर-काया पुनि अन्त परावा॥

छोरे पखिह्न पंखी जेहि वन मोर निबाहु।
खिल चला तेहि वनकहं तुम अपने घर जाहु॥

चहुं दिस आन सो डौंड़ी फेरी। भइ कटकाई राजाकेरी॥
जानवंत अहहिं सकल दरकाना। सांभर लेहु दूर है जाना॥
सिंहलदीप जाय सब चाहा। मोलन पाउब जहां बिसाहा॥
सब निवहै पुनि आपन सांठी। सांठी विन सो रहं मुख माठी॥
राजा चला साज कै जोगू। साजी वेग चलें सब लोगू॥
गर्व जो चढ़ी तुरीकै पीठी। अब भुइं चलहु सरग सो डीठी॥
मन्ना लीन्ह होइ संग लागू। गुदर जाय सबही यह आगू॥

का निचिन्त रे मनै अपनी चिन्ता आछ।
लेह सजग भा आगमन पुनि पछताइ न पाछ॥

विनवै रतनसेन की माया। माथे छात पाट नित पाया॥
वर्षहिं नवनिधि लच्छ पियारी। राज छांड़ि जन होहिं भिखारी॥
नित चन्दन लागी जेहिं देहा। सो तन देखि भरव अब खेहा॥
सब दिन रहे करत तुम भोगू। सो कैसे साधव तप योगू॥
कैसे धूप सहव विन छांहा। कैसे नींद चलब भुइं मांहा॥

कैसे ओढ़व कांथर कंथा। कैसे पांय चलव भुइं पंथा॥
कैसे सहव खनहि खन भूखा। कैसे खाव करकटा सूखा

राज पाट दर पुरुख सब तुमहीं सों उजियार।
वैठि भोग रस माहिंके न चल तेहि अंधियार॥

मोहिं यह लोभ सुनवा न माया। काकर सुख काकर यह काया॥
जो नियान तन होइ यह छारा। माटी पोष मरे को भारा॥
का भूलों यहि चन्दन चोवा। वैरी जहां अंग के रोंवा॥
हाथ पांय सरवन औ आंखी। ये सब भरहिं आय पुनि साखी॥
सूति सूति तन वोलहिं दोखा। कहो कहांहो यह गति मोखा॥
जो भल होत राज औ भोगू। गोपीचन्द नहिं साधत योगू॥
उन्हें सृष्टि जो देख परेवा। तजा राज कजरीवन सेवा॥

देखि अन्त अस होबहि गुरु दीन्ह उपदेस।
सिंहलदीप जाव मैं माता तुमसों मोर अंदेस॥

रोवहिं नागमती रनवासू। कै तुम कन्त दीन्ह वनवासू॥
अव को हमहिं कोहि भोगिनी। हमहूं साथ होयहहिं योगिनी॥
की हम लावहु आपन साथा। की अव मार चलहु सें हाथा॥
तुम अस विछुड़े पीव पिरीता। जहंवां राम तहां संग सीता॥
जब लहि जिव संग छांड़ि न काया। करिहौं सेव पखारहुं पाया॥
भली पदमिनी रूप अनूपा। हमते कोई न आगरि रूपा॥
भौहें भली पुरुख न को दीठी। जहं जाना तहं दीन्ह न पीठी॥

दीन्ह असीस सबै मिलि तुम माथे नित छात।
राज करी चित्तौर गढ़ राखो पिय अहिवात॥

तुम तिरिया मति हीन तुम्हारी। मूरख सोई मता घर नारी॥
राघव जो सीता संग ला । रावन हरी कौन सिधि पाई॥
यह संसार सपन जस हेरा। अन्त न आपन को कहि केरा॥
भरथरि हिं नहिं सुनी अयानी। जेहिके घर सोरहसे रानी॥
कुच लीन्हें तरवा सहराई। भा जोगी कोउ संग न लाई॥
जोगी काहि भोग से काजू। चहो न मेहरी चहै न राजू॥
जुड़ि करकटापै भीखहि चाहा। जोगी तात भातसों काहा॥

कहा न मानी राजा तजी सवाई भौर।
चला छांड़िकै रोवत फिरके दीन्ह न धौर॥

रोवत माता फिर न बारा। रतन चला जग भा अंधियारा॥
बारा मोर जिया वर रता। सो लैचला सुआ परबता॥
रोवहिं रानी तजहिं परानां। फोरहिं बरी करहिं खरिहाना॥
चूरहिं गें अभरन उर हारू। अब काकहं हम करब सिंगारू॥
जाकहं कही रहसिकै पीव। सोई चला काकर यह जीव॥
मरी चहहिं पै मरे न पावहिं। उठ आग सब लोग बुझावहिं॥
घरी एक सुठ भयो अंदूरा। पुनि पाछे बीता होइ रूरा॥

टूटिमनै नव मोती फूटमनै दस कांच।
लीन्ह समेट सबै आभरन होयगा दुखकर नाच॥

निकसा राजा सुनकै पूरे। छांड़ि नगर मेला होय दूरे॥
राय रंक सब भयी बियोगी। सोरह सहस कुंवर भयी जोगी॥
माया मोह हरी सें हाथा। देखि न बूझनियान न साथा॥
छांड़हिं लोग कुटुंब सब कोऊ। भे निरास दुखसुख तज दोऊ॥
संवरहिं राजा सोइ अकेला। जेहि रे पन्थ खेलै होय चेला॥

नगर नगर औ गांवहिं गांवां। छांड़ चला सब ठांवहिं ठांवां॥
काकर गढ़ काकर मठ माया। ताकर सब जाकर जिव काया॥
चला कटक जोगिनके करकै गेरुवा भेस।
कोस बीस चारहुं दिस जानहुं फूला टेसु॥
आगे सगुन सगुनयहिं तका। दही मांभ रूपेकर टका॥
भरे कलस तरुनी चलि आईं। दही लियि ग्वलिन गुहराईं॥
मालिन आय मौर ले गाथे। खंजन बइठ नागके माथे॥
दाहिन मिरग आयगा बायें। प्रतीहार बोला घर बायें॥
बिरष सवरिया दाहिन बोला। बायें दिस गीदर नहिं डोला॥
बायें अकासी धूरे आयी। लोवा दरस आय दिख रायी॥
बायें कुररी दाहिन कोचा। पहुंचो भुगति जइस मन रोचा॥
जाकहं सगुन होहिं अस औ गवनै जेहि आस॥
अष्ट महासिधि पंथहि जस कवि कहा बिआस॥
भयो पयान चला तब राजा। संख नाद जोगिन कर बाजा॥
कहि न आज कुछ थोर पयाना। काल्ह पयान दूर है जाना॥
वह मिलान जो पहुंचे कोई। तब हम कहब पुरुख भल सोई॥
है आगे परबत की बाटैं। बिषम पहाड़ अगम सठ घाटैं॥
बिच बिच कोह नदी औ नारा। ठांवहिं ठांव बैठि बटपारा॥
हनुमतकेर सुनत पुनि हांका। वहिको पार होयको थाका॥
अस मन जानि संभारहु आगू। अगवाकेर होहु पछलागू॥
करहिं पयान भोर उठि नितहि कोस दस जाहिं।
पंथो पंथा जो चलहिं ते कित रहें औ ठाहिं॥

करइ दीठि थिर होय बटाऊ। आगू देखि धरइ भुइं पांऊ॥
जोगि ओबट भुइं परी भुलाय। को मरि पंथ चले नहिं जाय॥
पांयन पहिर लेइ सब पंवरी। कांट न चुभे न गड़े अंकवरी॥
परे आय अब वनखंड माहां। डंडकआरन बीच निवाहां॥
सघन ढांख वन चहूं दिस फूला। बहु दुख मिले वहांकर भूला॥
झांखरजहां सु छांड़इ पंथा। हिलग मकोय न फारइ कंथा॥
दहिने विदर चंदेरी बायें। वहिकहं होव बाट दुइ ठायें॥

एक बाट गई सिंहल दूसर लंक समीप।
है आगे पंथ दोवनहिं हम गवनव केहि दीप।

ततखन बोला सुआ सरेखा। अगवा सोइ पंथ जेहिं देखा॥
सोका उड़े च जेहि तन पांखू। ले सो पलासहि बोले साखू॥
जस अंधा आंधी कर संगी। पंथ न पाव होय सहलंगी॥
सुनि मति काज चहसि जो साजा। बीजानगर विजैगिरराजा॥
पूंछा जहां कुण्ड औ गोला। तजि बाएं अंधियार खटोला॥
दखिन दाहिने रहै तिलंगा। उत्तर मांझ होय करहा कटंगा॥
मांझ रतन पुरसौंह दुवारा। झारखंड वे बाए पहारा॥

आगें बांउ उड़ीसा बाय देहि सुबाट।
दहिनावरत लायके उतर समुदकी घाट

होत पयान जाय दिनकेरा। मिरग अरन महिं कीन्ह बसेरा॥
कुस सांठर भइ सरी सपेती। करवट आय बनी भुइं सेती॥
कहा मिली जस भूमि गलोजा। चलि दस कोस ओस तन भीजा॥
ठांव ठांव सब सोवहिं चेला। राजा जागै आप अकेला॥

जेहिके हिये प्रेम रंग जामा। का तेहि नींद भूख बिसरामा॥
बन इंधियार रयनि अंधियारी। भादौं बरन भयो अति भारी॥
किंगरी गहे हाथ बैरागी। पांच तन्त धुनि ओही लागी॥

नयन लाग तेहि मारग पद्मावत जेहि दीप।
जैसे स्वांति बूंदकहं बन चातक जल सीप॥

मासक लाग चलत तेहि बाटा। उतरे जाय समुदकी घाटा॥
रतनसेन भा जोगी जती। सुनि भेटे आवा गजपती॥
जोगी आप कटक सब चेला। कौन दीप कहं जाहहि खेला॥
भलो आय सब माया कीजे। पहुनाई कहं आयसु दीजे॥
सुनहु गजपती उतर हमारा। हम तुम एकी भाव निरारा॥
सो तेहिकहं जेहिमहं यह भावा। जो निरास तेहि लाड़ नसावा॥
यही बहुत जो बोहित पाउं। तुमते सिंहल दीप सिधाउं॥

जहां मोहिं निज जाना कटक हों लिये बार।
जौरे जियों तौलै फिरों मरों तो वहकी बार॥

गजपति कही सीस बर मांगा। इतनी बोल न होइ है खांगा॥
यहि सब देउं आन पे गढ़ी। फूल सोई जो महेसर चढ़ी॥
पे गुसांईसों एक नवाती। मारग कठिन जाब केहि भांती॥
सात समुद्र असूझ अपारा। मारहिं मगरमच्छ घड़ियारा॥
उठे हिलोर न जाय संभारी। भागहि कोइ निबहे ब्योपारी॥
तुम सुखिया अपने घर राजा। एते दुख जो सही केहि काजा॥
सिंहलदीप जाय सो कोई। हाथ लेहें आपन जिव होई॥

खारि छीर दधि उदधि सुरा जल पुनि किलकिलाकूत।
को चढ़ि नांघ समुद ए सातौं है काकर अस पूत॥
गजपति यहि मन सकती सीवा। पै जेहि प्रेम कहां तेहि जीवा॥
पहिले सिर दै पग जो धरीजे। मुयेकेर का मीच करीजे॥
सुख संकलप दुख सांभर लीन्हा। तौ पयान सिंहलकहं कीन्हा॥
भंवर जानि प कमल पिरीती। जेहि महं बिथा प्रेमकी बीती॥
औ जें समुद प्रेमकर देखा। तें यहि समुद बूंद-वर लेखा॥
सात समुद सत लीन्ह संभारू। जो धर्त्ती का गरू पहारू॥
जो पै जीव बांध सत वेरा। पर जिव जाय फिरै नहिं फेरा॥

रंग नाथ हौं जाकर हाथ वहीके नाथ।
गहै नाथ सो खींचै फिरै न फेरै माथ॥

प्रेमसमुद जो अति अवगाहा। जहां न वार न पार न थाहा॥
जौ वह समुद गाह यहिं परै। जो अवगाह हंस होइ तरै॥
हौं पदमावत कर भिखमंगा। दीठि न आव समुद औ गङ्गा॥
जेहि कारन गैं कांथर कंथा। जहां सो मिलै जाउं तेहि पंथा॥
अब यह समुद परो होय मरा। प्रेम मोर पानीके करा॥
मर भा कोइ कतहूं लै जाऊं। वहको पंथ कोऊ धरि खाऊं॥
अस मन जान समुदमहं परऊं। जो कोइ खाय वेग निसतरऊं॥

सरग सीस धर धरती हिया सो प्रेम समुन्द।
नयन कौड़िया होय रहे लै लै उठ तेहि बुन्द॥

कठिन वियोग जोग दुख दाहू। जनम जरत हौं और न पाहू॥
डर लज्जा तहं दोउ गंवानी। देखै कछू न आग न पानी॥

आग देखि वह आगें धावा। पानि देखि वह सोंहिं धसावा॥
जस बावर न बुझायि बूझा। कौनो भांति जाय का सूझा॥
मगर मच्छ डरमने न लेखा। आपहिं चहौं पार भा देखा॥
औ नहिं खाय वह सिंह सिंदूरा। काठे जाहि अधिक यह भूरा॥
काया माया सङ्ग न आथी। जेहि जिव सौंपा सोई साथी॥
जो कुछ दर्व अहा सङ्ग दान दीन्ह संसार।
का जानी केहिकी सत दई उतारै पार॥
धन जीवन औ ताकर जिया। ऊंच जगतमहि जाकर दिया॥
दिया सो सब जपतप उपराहीं। दिया बराबर कुछ जग नाहीं
एक दियाते दसगुन लाहा। दिया देखि सबको मुख जाहा॥
दिया करै आगी उजियारा। जहां न दिया तहां अंधियारा॥
दिया मंदिर निसि करै उजोरा। दिया नाहिं घर मूसहिं चोरा॥
हातिम करन दिया जो सिखा। दिया रहा धरमन महं लिखा॥
दिया सो काज दोहं जग आवा। यहां जो दिया वहां सब पावा॥
निरमल पंथ कीन्ह तेहि जेहि रे दिया कुछ हाथ।
कुछ नहिं कोइ लै जायहौ दिया जाय पै साथ॥

बोहितखण्ड।

सत न डोल देखा गजपती। राजा हत सत दोनों सती॥
आपन नाहिं कया पौ कंथा। जीव दीन्ह अगमन तेहि पंथा॥
निर्भै चला भर्म डर खोय। साहस जहां सिद्ध तहं होय॥

निश्चै चला छांड़िकै राजू। बोहित दीन्ह दीन्ह सब साजू॥
चढ़ा वेग औ बोहित पेली। धन वह पुरुख प्रेमपथ खेली॥
प्रेम-पंथ जो पहुंचै पारा। बहुर न आय मिलै यहि छारा॥
तेहि पावा उत्तम कैलासू। जहां न मीच सदा सुख बासू॥

यहि जीवनकी आसकाजइस स्वप्न तिल आध।
मुहमद जीतहि जो मुये ते पूरुख सिध साध॥

जस दिन रयनि चलै गज भांती। बोहित चली समुदकी पांती॥
धावहि बोहित सब उपराहीं। सहस कोस एक पलमहं जाहीं॥
समुद अपार सरग जनु लागा। सरग न खाल गिनै वैरागा॥
ततखन एक चाल्ह दिखराई। जनु धौलागिरि पर्व्वत आई॥
उठै हिलोर जो चाल्ह निराजै। लहर अकास लागि भुइं बाजै
राजा सितें कुंवर सब कहै। अस अस मच्छ समुदमहं अहैं॥
तेहिरे पंथ हम चाहत गवना। होऊ सचेत बहुर नहिं अवना॥

गुरु हमार तुम राजा हम चेला तुम नाथ।
जहां पाउं गुरु राखै चेला राखै माथ॥

केवट हंसे सुनत को बंजा। समुद न जानि कुवांकर मंजा॥
यहि तो चाल्ह न लागै कोहू। का कहियो जब देखब रोहू॥
सो अबहीं तुम देखि नाहीं। जेहि मुख ऐसे सहस समाहीं॥
राजपंखि तेहिपर मंडराहीं। सहस कोस तिनकी परछाहीं॥
ते वै मच्छ ठौरगहि लेहीं। सावक मुख चारा ले देहीं॥
गरजे गगन पंखजो खोलहिं। डोले समुद डहन जो डोलहिं॥
तहां न सूज न चांद असूझा। चढ़ै सोई जेहि आगमन बूझा॥

दस महं एक जाय कोइ कर्म्म धर्म्म सत नेम।
वो हित पार होय जो तौहो कुशल औ खेम॥

बात कहत भइ देख गुहायी। केवटहि चालह समुद महं मारी॥
हस्ती लाय सिष्ट सब ढीला। दौड़ आय इक चालहि लीला॥
केवट लागि लागि सब वलो। फिरें न चालह जाय वहि चलो॥
वोहित सहस जाहिं वहुं ओरा। होय कलोल जाहिं तरि वोरा॥
सुनिके आप चढ़ासें राजा। औ सब लोग देय मिल वाजा॥
भाल वांस खांड़े बहु परहीं। जान पखाल बाजके चरहीं॥
चारालील जो माछर वाभौ। कहां जाइ जो जाकर खाभौ॥

माछर कर भूख हि हृदय तेहि सौधेविष वान।
सवहिं पहुंचकी मारा चालहि तजा परान॥

जस धौलागिरि परवत होई। तेही भांति उतराध्यो सोई॥
सवै देस मिलि तैरहिं आना। लिये कुलहाड़ी लोग जहाना॥
जनु परवतकहं लागहि चाटी। लेगये मांस रही सब कांटी॥
मांजर परी कोस दस वेड़ी। मांजरि कस जत खेत बरेंड़ी॥
नयन सो जानि कोटकी पंवरें। कित असगहे फिरे तेहि भंवरे॥
रतन सेनसे संघी कहें। अस अस मच्छ समुद मह अहें॥
राजा तुम चाहो तहिं गवना। होइ के सजग वहुरि नहिं अवना॥

तुम राजा औ गुरूहम सेवक औ चेर।
कीन्ह चहें सब आयसु अब गवनी तहि फेर॥

राजें कहा कीन्ह को प्रेमा। जहां प्रेम तहं कूसल छेमा॥
तुम खेवो जो खेवहि पारहिं। जेसे आप तरहिं मोहिंता रहिं॥

मोहिं कुसलकर सोच न ओता। कुसल होत जो जनम न होता
धरती सरग जांतपर दोऊ। जो यहि बिच जिव राख न कोऊ
हौं अब कुसल एक पै मांगौं। प्रेमपंथ सतबांधि न खांगौं ॥
जो सत हियै तौ पंथहि दिया। समुद न डरै देखि मरजिया ॥
तहंलग हेरों समुद ढिढोरों। जहंलग रतन पदारथ जोरौं ॥

सप्त पताल खोजकैं काढ़ौं वेद गरंथ।
सात समुद चढ़ि धावों पदमावत जेहि पंथ ॥

सप्तसमुद्रखण्ड।

सायर तरै हियै सत पूरा। जिहि जौ सत कायर पुनि सूरा ॥
तहं सब बोहित पूर चलाई। जहं सत पवन पंख जनु लाई ॥
सत साथी सतगुरु हम वारू। सत्त गहौलै लावै पारू ॥
सती नाक सब आगू पाछू। जहं जहं मगरमच्छ औ काछू ॥
उठै ललर जनु उठै पहारा। चढ़ै सरग औ परै पतारा ॥
डोलहिं बोहित लहरें खाई। सहस कोस इक पलमहं जाई ॥
राजें सो सत हिरदै बांधा। जेहि सत टेक करै गुर कांधा ॥

खारिसमुद सब नांघा आये समुद जहं छीर।
मिले समुद वै सातों वेहर वेहर नीर ॥

छीर समुदका बरनउं नीरू। सेत सरूप पियत जस छीरू ॥
उलटहिं मानिक मोती हीरा। दर्ब देखि मन होय न धीरा ॥

मनो अनचाह दरव औ भोगू। पंथ भुलाय विनासै जोगू॥
जोगी मनहिं उही रिस मारहिं। दरव हाथकै समद पयारहिं॥
दर्व लेइ जो इस्थिर राजा। जो जोगी तेहिके केहि काजा॥
पंथी पंथ दर्व रिपु होई। ठग वटपार चोर संग सोई।
पंथी सोइ दर्व सो रूसे। दर्व समेटि बहुत अस मूसे॥

छीर समुद सब नांघा आधे समुद दधिमाहिं।
जो है पंथके वावर ना तेहिं धूप न छाहिं॥

दधि समुद्र देखत तस दहा। पेमक लुब्ध दगध पै सहा॥
प्रेम जो डाढा धन वह जीव। दधि जमाय मथि काढ़े घीव॥
दधि इक बूंद जामि सब छीरू। कांजी बूंद विनसि होय नीरू॥
स्वांस डाढ मन मथनी गाढ़ी। हिये ज्योति विन फूटि न साढ़ी॥
जेहि जिय प्रेमचंदन तेहि आगी। प्रेम-भवन फिर डर नहिं भागी
प्रेमकि आग जरे जो कोय। ताकर दुख नहिं मिथ्या होय॥
जो जानहि सत आपहिं जारा। नासत हिये सत करे न पारा॥

दधि समुद्र पुनि पार भे प्रेमहि कहां संभार।
भावै पानी सिर परै भावि परहि अंगार॥

आय उदधि जल समुद अपारा। धरती सरग जरे तेहि भारा॥
आग जो उपजी ओहि समुन्दा। लंका जरी वही एक बुंदा॥
विरह जो उपजा ओही काढ़ा। खन न बुझाय जाय तन बाढ़ा॥
जेहि सो विरह तेहि आग न डीठी। सौहिं जरे फिर देहि न पीठी
जगमहं कठिन खड़ग की धारा। तेहि ते अधिक विरहकी झारा

अगम पंथ जो अइस न होई। साधु कहे पावै सब कोई॥
तेहि समुद्रमहं राजा परा। जरा चहै पे रोवं न जरा॥

तलफै तेल कराह जिमि इमि तलफै सब नीर।
बहि जो मलयगिरि प्रेमका सुबुंद समुद्र सरीर॥

सुरा-समुद पुनि राजा आवा। महुवा मधु छाती दिखरावा॥
जो तेहि पियै सो भांवर लेय। सीस फिरै पथ पैग न देय॥
प्रेम-सुरा जेहि के जिय माहां। कित वैठे महुवाकी छाहां॥
गुड़की पास दाख रस रसा। वेरी वेर मार मन गसा॥
विरहि न दगध कीन्ह तन भाठी। हाड़ जराय दीन्ह जस काठी
नयन नीर सों पोते किया। तस मधु चुवै वरै जस दिया॥
विरह सरागें भूंजे मांसू। गिर गिर पड़ें रकत के आंसू॥

मुहमद जइस परेमका हिये दीप तेहि राख।
सीस न देइ पतंग ज्यों तबलग चाख न वाख॥

पुनि किलकिला समुदमहं आई। गा धीरज देखत डर खाई॥
भा किलकिल अस उठ हिलोरा। जनु अकास टूटे चहुं ओरा॥
उठे लहर परवत की नाईं। फिर आवै जोजन लख ताईं॥
धरती लेत सरग लहि बाढ़ा। सकल समुद जानो भा ठाढ़ा॥
नीरै होय तरि ऊपर सोई। महा अरंभ समुदमहं होई॥
फिरत नीर जोजन लख ताका। जैसे फिरै कुम्हारक चाका॥
भा परलौ नेराना जबहीं। मरै सो ताकहं परलौ तबहीं॥

गयी औसान सबनके देख समुदकी बाढ़।
नेरि होत जनु लीले रहा नयन अस काढ़॥

हीरामन राजा सों बोला। यही समुद्र आय सत डोला॥
सिंहलदीप जो नाहिं निबाहू। यही ठाउं सांकर सब काहू॥
यहि किलकिल अस समुद गंभीरू। जेहि गुन होय सो पावै तीरू
यही समुद्र-पंथ मंझधारा। खांड़े की अस रेख हजारा॥
तीससहस कोसनकी बाटा। अस सांकर चलि सकै न चांटा॥
खांड़े चाहि पैन पैनाई। बार चाहि पातर पतराई॥
वही पंथ सब काहू जाना। होय दुसरे बिसवास नदाना॥

मरन जियन यहि पंथहि यैही आस निरास।
पड़ा सो गया पतालहि तरा सो गा कैलास॥

राजै दीन्ह कटककहं बीरा। सपुरुख होहु करहु मन धीरा॥
ठाकुर जेहिक सूर भा कोई। कटक सूर पुनि आपहिं होई॥
जौलहि सती न जिय सत बांधा। तौलहि देइ कहार न कांधा॥
प्रेम-समुदमहं बांधा बेरा। यहि सब समुद बुन्द जेहि केरा॥
नाहीं सरगु न चाहों राजू। ना मोहिं नरक सितें कुछ काजू॥
चाहों वहिकर दरसन पावां। जेहि मोहिं आन प्रेमपथ लावा॥
काठ काहि गाढ़ा का ढीला। बूड़ न समुद मगर नहिं लीला॥

कान्ह समुद धस लीन्हेंसि भा पाछे सब कोय।
कोइ काहू न संभारै आपन आपन होय॥

कोइ बोहित जस पवन उड़ाहीं। कोई चमक बीज पर जाहीं॥
कोई फल जस धाव तुषारू। कोई जइस बैल गरियारू॥
कोई हरू जानि रथ हांका। कोइ गरू पहाड़ भा थाका॥
कोई रेंगहिं जानहु चांटी। कोई टटि होहिं सर माटी॥

कोई खाय पवनकर झोला । कोई गिरहिं पात ज्यों डोला ॥
कोई परहिं भंवर जलमाहीं । फिरत रहहिं कोइ दिये न बांहीं
राजा कर भा अगमन खेवा । खेवक आगी सुआ परेवा ॥

कोइ दिन मिला सवेरें कोइ आवा पछराति ।
जाकर हुत जस साजू सो उतरा तेहि भांति ॥

सतें समुद्र मानसर आये । सत जो कीन्ह सहस सिधि पाये ॥
देखि मानसर रूप सुहावा । हिय हुलास पुरइन होय छावा ॥
गा अंधियार रयन मसि छूटी । भा भिनसार किरन रवि फूटी ॥
अस्त अस्त सब साथी बोले । अन्ध जो अहे नयन विधि खोले ॥
कमल विकस तस बेहंसी देहीं । भंवर दसन होय होय रस लेहीं ॥
हंसहिं हंस औ करहिं कुरेरा । चुनहिं रतन मुक्ताहल हेरा ॥
जो अस आव साधि तप जोगू । पूजी आस मानरस भोगू ॥

भंवर जो मंसा मानसर लीन्ह कमलरस आय ।
घुन जो हियाव न कैसका झर काठ तस खाय ॥

सिंहलद्वीपखण्ड ।

पूछा राजा कहु गुर सुवा । न जनौं आज कहां दिन उवा ॥
पवन वास सीतल ले आवा । कया दहत चंदन जनु लावा ॥
कबहुं न अइस जुड़ान सरीरू । पड़ा अगिनमहं जानहु नीरू ॥
निकसत आव किरन रवि-रेखा । तिमिर गई निरमल जग देखा ॥

उठे मेघ अस जानहु आगी। चमके बीजु गगन परलागी॥
तेहि ऊपर जनु ससि परकासा। औ सोगवो चहुं भयो गिरासा॥
और नखत चहुं दिस उजियारी। ठावहिं ठांव दीप अस बारी॥

　　और दखिन दिस नेरे कंचन मेरु दिखाउ।
　　जइस वसंत ऋतु आवे तइसि वास जग आउ॥

तुइं राजा जस विक्रम आदी। तुइं हरिचंद बैनसतवादी॥
गोपिचंद तुइं जीता जोगा। औ भरथरी न पूज वियोगा॥
गोरख सिद्धि दीन्ह तुहि हाथू। तारी गुरु मुछन्दर नाथू॥
जीति प्रेम तुइं भूमि अकासू। दीठि परा सिंहल कैलासू॥
वै जो मेघ गढ़ लाग अकासा। वजरी कटी कोट चहुंपासा॥
और नखत वेहिके चहुं पासा। सब रानिन की अहें उवासा॥
तेहिपर ससि जो चंहचहि भरा। राज मंदिर सोने नग-जरा॥

　　गगन सरोवर सहस कमल कुमुद तराई पास।
　　तुइं रवि उवा भंवर होय पवन मिला ले वास॥

सो गढ़ देखि गगनते ऊंचा। नयन देखिकर ग्यान न पहुंचा॥
बिजुरी चक्र फिरें चहुं फेरे। औ जमकात फिरहिं जम घेरे॥
धाय जो बाजा किय मन साधा। मारा चक्र भयो दुइ आधा॥
चांद सुरज औ नखत तराई। तेहि डर अंतरिछ फिरें सबाई॥
पवन जाय तहं पहुंचा चहा। मारा दइस लोटि भुइं रहा॥
अगिन उठे जरि बुझे नियाना। धुवां उठा उठि बीच मिलाना॥
पानि उठा उठि जाय न छुवा। फिरा रोय आयो भुइं चुवा॥

रावन वहा सौहिंके हेरों उतरि दसो गयी माथ।
शंकर धरा ललाट भुइं और को जोगी नाथ॥
तहां देख पद्मावत रामा। भंवर न जाय न पंखो नामा॥
अव सिख एक देउं तुहि जोगो। पहिले दरसन होय तो भोगो॥
कंचन मेरु दिखावे जहां। महादेवकर मण्डप तहां॥
वह खखण्ड जस परवत मेरू। मेरुहि लाग होय तस फेरू॥
माघ मास पाछल पख लागें। श्रीपंचमी होय यहि आगें॥
उघरै महादेवकर वारू। पूजन जाय सकल संसारू॥
पद्मावत पुनि पूजन आई। हैहै वह दिन दीठि मिलाई॥
तुम गवनो वह मंडफकहं हौं पद्मावत पास।
पूजे आय वसन्त जो पूजे मनकी आस॥
राजैं कहां दरस जो पाऊं। परवत काहि गगनकहं धाऊं॥
जेहि परवतपर दरसन लीन्हा। शिरसों चढ़ी पायं का कीन्हां॥
मोहिं सो भावै ऊंचे ठाऊं। ऊंचे लेवों प्रीतम नाऊं॥
पुरुख चाहिये ऊंच हियाऊ। दिन॰दिन ऊंचे राखि पांऊ॥
सदा ऊंचपै सेये वारू। ऊंचेसे कीजे व्योहारू॥
ऊंचे चढ़ें ऊंच खंड सूझा। ऊंचे पास ऊंच मति वूझा॥
ऊंच सङ्ग सङ्गत नित कीजे। ऊंचे लाय जीव वलि दीजे॥
दिन दिन ऊंच होय सो जेहि ऊंचेपर जाव।
ऊंच चढ़े जो खसि पड़े ऊंच न छांड़े काव॥
नीच संग नित होय निचाई। जैसे हंस काग की नाईं॥
नीचसे कवहूं न होय भलाई। नीचहिसों पर होय मुड़ाई॥

नीच न कबहूं जियमहं ताके। नीच नहीं कबहूं मुख भाखि॥
नीच न कबहूं आवे काजा। नीच हि अहै न एको लाजा॥
नीचेका संग कबहूं न कीजे। नीचे पंथ पाउं नहिं दीजे॥
नीचे नहिं कीजे व्योहारू। नीच न कबहूं दीजे भारू॥
नीचे केर न कीजे साथा। नीचगहे कुछ आव न हाथा॥
होय नीच नहिं कबहूं जेहि ऊंचे मन भाव।
नीच ऊंचते हंसी नीचेकेर सुभाव॥
हीरामन दे बचा कहानी। चला जहां पद्मावत रानी॥
राजा चला संवरि सो लता। परबत कहं जो चला परबता॥
का परवत चढ़ि देखे राजा। ऊंच मंडप सोने सब साजा॥
अमिरत-फर सब लागि अपूरे। औ तहं लागि सजीवन-मूरे॥
चौमुख मंडप चहूं केवारा। बइठ देवता चहूं दुवारा॥
भीतर मंडप चार खंभ लागी। जेहि वे छुवे पाप तेहि भागी॥
संख घंट नित बाजहिं सोई। औ बहु होम जाप तहं होई॥
महादेव कर मण्डपं सकल यात्रा आव॥
जस इच्छामन जेहिकी सो तैसो फल पाव॥

मण्डपखण्ड।

राजा बावर बिरह-बियोगी। चेला सहस तीस संग जोगी॥
पद्मावतकी दरसन आसा। दंडवत कीन्ह मंडप चहुं पासा॥
पूरबद्वार होय सिरनावा। नावत सीस देव पुनि आवा॥